



INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान
प्रयोगशाला सहायक
(Lab. Assistant) {विज्ञान}
(राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग (RSMSSB))



भाग – 2

विश्व + भारत का सामान्य ज्ञान (GK) + शैक्षणिक मनोविज्ञान

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “राजस्थान प्रयोगशाला सहायक परीक्षा (Lab. Assistant) (Science)” को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “प्रयोगशाला सहायक परीक्षा (Lab. Assistant) (Science)” में पूर्ण संभव मदद करेंगे /

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं

प्रकाशक:

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

WhatsApp करें - <https://wa.link/vitrdd>

Online Order करें - <https://bit.ly/lab-assistant-notes>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
<u>विश्व का भूगोल</u>		
1.	ब्रह्माण्ड एवं सौरमंडल	1
2.	भौगोलिक संरचना एवं प्रमुख स्थलाकृतियाँ	5
3.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	14
4.	समुद्री जलमार्गों	19
5.	प्रमुख औद्योगिक प्रदेश	21
<u>भारत का भूगोल</u>		
1.	सामान्य परिचय	25
2.	भौतिक विशेषताएं और प्रमुख भौतिक विभाजन	26
3.	नदियाँ एवं झीलें	31
4.	जलवायु	36
5.	प्राकृतिक वनस्पति	39
6.	भारत में मृदा	42
7.	कृषि	44
8.	खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	49
9.	प्रमुख उद्योग	60
10.	परिवहन एवं प्रमुख परिवहन गलियारे	64
<u>भारत का इतिहास</u>		
1.	प्रागैतिहासिक काल (प्राचीन काल)	73
2.	वैदिक संस्कृति	76
3.	बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं शैव धर्म	79

4.	महाजनपद काल	84
5.	मौर्य काल एवं मौर्योत्तर काल	85
6.	गुप्त काल एवं गुप्तोत्तर काल	88
<u>मध्यकालीन भारत</u>		
1.	अरबों का सिन्ध पर आक्रमण	90
2.	दिल्ली सल्तनत के प्रमुख राजवंश	92
3.	बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य	100
4.	मुगल साम्राज्य	102
5.	भक्ति एवं सूफी आंदोलन	110
<u>आधुनिक भारत का इतिहास</u>		
1.	18 वीं शताब्दी के आसपास अंग्रेजों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ	112
2.	1857 ई. का विद्रोह	118
3.	सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन	122
4.	राष्ट्रीय आंदोलन	125
5.	गाँधी युग	131
6.	क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक	136
7.	स्वतंत्रता के आसपास का भारत	139
<u>भारत का संविधान</u>		
1.	संवैधानिक विकास	141
2.	संविधान सभा	144
3.	संविधान की प्रमुख विशेषताएं	146

4.	संविधान की प्रस्तावना	148
5.	मौलिक अधिकार	151
6.	राज्य के नीति निर्देशक तत्व	153
7.	मौलिक कर्तव्य / मूल कर्तव्य	155
8.	संविधान संशोधन	156
9.	आपातकालीन उपबंध	158
10.	राष्ट्रपति	160
11.	उपराष्ट्रपति	170
12.	भारतीय संसद	171
13.	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	176
14.	सर्वोच्च न्यायालय	177
15.	राज्य विधान मंडल	178
16.	निर्वाचन आयोग	183
17.	नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक	185
18.	राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC)	187
19.	स्थानीय स्वशासन और पंचायती राज	187
<u>अर्थशास्त्र</u>		
1.	अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणायें	191
2.	बैंकिंग	193
3.	सार्वजनिक वित्त (लोक वित्त)	208
4.	राष्ट्रीय आय	212
5.	संवृद्धि एवं विकास का आधारभूत ज्ञान	218
6.	मुद्रास्फीति - अवधारणा, प्रभाव एवं नियंत्रण तंत्र	220

7.	मानव संसाधन एवं आर्थिक विकास	224
8.	गरीबी एवं बेरोजगारी	228
<u>शैक्षणिक मनोविज्ञान</u>		
1.	शिक्षा मनोविज्ञान का परिचय	234
2.	कक्षा में अध्यापकों की भूमिका	243
3.	बाल विकास / शिक्षार्थी का विकास	245
4.	अधिगम (सीखना)	265
5.	व्यक्तित्व	279
6.	बुद्धि एवं सृजनात्मकता	287
7.	अभिप्रेरणा	299
8.	व्यक्तिगत विभिन्नताएं	301
9.	शिक्षण अधिगम	305
10.	समावेशी शिक्षा	313
11.	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना - 2005	317
12.	आंकलन, मापन एवं मूल्यांकन	320
13.	शिक्षा का अधिकार अधिनियम - 2009	328
14.	अभिरुचि, स्मृति, चिंतन एवं कल्पना	330
15.	भारत की नई शिक्षा नीति - 2020	335

विश्व का भूगोल

अध्याय - 1

ब्रह्माण्ड एवं सौरमंडल

- ब्रह्माण्ड का अध्ययन खगोलिकी कहलाता है।
- महाविस्फोट सिद्धांत (big-bang theory) ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति से संबंधित है।
- ब्रह्माण्ड दिखाई पड़ने वाले समस्त आकाशीय पिंड को ब्रह्माण्ड कहते हैं। ब्रह्माण्ड विस्तारित हो रहा है ब्रह्माण्ड में सर्वाधिक संख्या तारों की हैं।

तारा

- वैसा आकाशीय पिंड जिसके पास अपनी ऊष्मा तथा प्रकाश हो तारा कहलाता है।
- तारा बनने से पहले विरल गैस का गोला होता है।
- जब ये विरल गैस केंद्रित होकर पास आ जाते हैं तो घने बादल के समान हो जाते हैं जिन्हें निहारिका कहते हैं।
- जब इन नेबुला में संलयनविधि द्वारा दहन की क्रिया प्रारंभ हो जाती है तो वह तारों का रूप ले लेता है।
- तारों में हाइड्रोजन का संलयन हिलियम में होता रहता है। तारों में इंधन प्लाज्मा अवस्था में होता है।
- तारों का रंग उसके पृष्ठ ताप पर निर्भर करता है।
- लाल रंग - निम्न ताप (6 हजार डिग्री सेल्सियस)
- सफेद रंग - मध्यम ताप
- नीला रंग - उच्च ताप
- तारों का भविष्य उसके प्रारंभिक द्रव्यमान पर निर्भर करता है।
- जब तारा सूर्य का ईंधन समाप्त होने लगता है तो वह लाल दानव का रूप ले लेता है और लाल दानव का आकार बड़ा होने लगता है।
- यदि लाल दानवों का द्रव्यमान सूर्य के द्रव्यमान के 1.44 गुना से छोटा होता है तो वह श्वेत वामन बनेगा।

सौर मंडल

- सूर्य तथा उसके आसपास के ग्रह, उपग्रह तथा शुद्ध ग्रह, धूमकेतु, उल्कापिंड उनके संयुक्त समूह को सौरमंडल कहते हैं।
- सूर्य सौरमंडल के केंद्र में स्थित है।
- सौरमंडल में जनक तारा के रूप में सूर्य है।
- सौर मंडल के सभी पिंड सूर्य का चक्कर लगाते हैं।

सूर्य

- यह हमारा सबसे निकटतम तारा है सूर्य सौरमंडल के बीच में स्थित है। सूर्य की आयु लगभग 15 अरब वर्ष है जिसमें से वह 5 अरब वर्ष जि चुका है।
- सूर्य के अंदर हाइड्रोजन का हिलियम में संलयन होता है और ईंधन प्लाज्मा अवस्था में रहता है।
- आंतरिक संरचना के आधार पर सूर्य को तीन भागों में बांटते हैं।

सूर्य की बाहरी परत - सूर्य के बाहर उसकी तीन परतें हैं-

1. **प्रकाश मंडल** - यह सूर्य का दिखाई देने वाला भाग है इसका तापमान 6000 डिग्री सेल्सियस होता है।
2. **वरुण मंडल** - यह बाहरी परत के आधार पर मध्य भाग है इसका तापमान 32400 डिग्री सेल्सियस होता है।
3. **(corona)** - यह सूर्य का सबसे बाहरी परत होता है जो लपट के समान होता है इसे केवल सूर्य ग्रहण के समय देखा जाता है इसका तापमान 27100 डिग्री सेल्सियस होता है।
 - सूर्य में 75% हाइड्रोजन तथा 24% हिलियम है।
 - शेष तत्व की मात्रा 1% में ही निहित है।
 - सूर्य का द्रव्यमान पृथ्वी से 332000 गुना है।
 - सूर्य का व्यास पृथ्वी से 109 गुना है।
 - सूर्य का गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी से 28 गुना है।
 - सूर्य का घनत्व पृथ्वी से 20 गुना है।
 - सूर्य से प्रति सेकंड 10^{26} जूल ऊर्जा निकलती है।
 - सूर्य पश्चिम से पूर्व घूर्णन करता है।
 - सूर्य का विषुव रेखीय भाग 25 दिन में घूर्णन कर लेता है।
 - सूर्य का ध्रुवीय भाग 31 दिन में घूर्णन कर लेता है।

ग्रह - वैसा आकाशीय पिंड जिसके पास ना अपनी ऊष्मा हो और ना ही अपना प्रकाश हो वह ऊष्मा तथा प्रकाश के लिए अपने निकटतम तारे पर आश्रित होता तथा उसी का चक्कर लगाता हो प्रारंभ मे ग्रहों की संख्या 9 थी परंतु वर्तमान में 8 ग्रह हैं ग्रहों के 2 श्रेणियों में बांटते हैं।

पार्थिव - इन्हें आंतरिक ग्रह भी कहते हैं।

- यह पृथ्वी से समानता रखते हैं।
- इनका घनत्व अधिक होता है तथा यह ठोस अवस्था में होते हैं।
- इनके उपग्रह कम होते हैं या होते ही नहीं हैं इन ग्रहों की संख्या चार होती है।
 - a. बुध
 - b. शुक्र
 - c. पृथ्वी
 - d. मंगल

जोवियन ग्रह - इसे बाह्य ग्रह कहते हैं। यह बृहस्पति से समानता रखते हैं। इनका आकार बड़ा होता है किन्तु घनत्व कम होता है, यह गैस की अवस्था में पाए जाते हैं। इनके उपग्रहों की संख्या अधिक है।

प्लूटो - यह नौवां ग्रह था। किन्तु 24 अगस्त 2006 को चेक गणराज्य की राजधानी प्राण में अंतरराष्ट्रीय खगोल खंड की बैठक हुई जिसमें प्लूटो को ग्रह की श्रेणी से निकालकर बोना ग्रह में डाल दिया।

- प्लूटो को ग्रह की श्रेणी से निकालने के तीन कारण थे
 1. इसका आकार अत्यधिक छोटा था
 2. इसकी कक्षा दीर्घ वृत्तीय नहीं थी
 3. इसकी कक्षा वरुण की कक्षा को काटती थी

उपग्रह

- इनके पास ऊष्मा और प्रकाश दोनों नहीं था।
- यह अपने निकटतम तारे से ऊष्मा और प्रकाश लेते हैं किन्तु यह चक्कर अपने निकटतम ग्रह का लगाते हैं।

उपग्रह दो प्रकार के होते हैं

1. प्राकृतिक उपग्रह - चंद्रमा
2. कृत्रिम उपग्रह - यह मानव निर्मित होते हैं संचार तथा मौसम की भविष्यवाणी करता है।

सूर्य से दूरी के अनुसार ग्रह

1. बुध
2. पृथ्वी
3. बृहस्पति
4. अरुण
5. शुक्र
6. मंगल
7. शनि
8. वरुण

पृथ्वी से दूरी के अनुसार

1. शुक्र
2. मंगल
3. बुध
4. बृहस्पति
5. शनि
6. अरुण
7. वरुण

आकार के अनुसार ग्रह

1. बृहस्पति
2. शनि
3. अरुण
4. वरुण
5. पृथ्वी
6. शुक्र
7. मंगल
8. बुध

आंखों से हम पांच ग्रहों को देख सकते हैं।

1. बुध
2. शुक्र
3. मंगल
4. बृहस्पति
5. शनि

उल्टा घूमने वाले ग्रह पूर्व से पश्चिम

- शुक्र तथा अरुण
- सर्वाधिक घनत्व पृथ्वी का तथा कम घनत्व शनि का।
- सबसे बड़ा उपग्रह बृहस्पति का गेनीमैड और सबसे छोटा उपग्रह मंगल का डिमोस है।

- सबसे तेज घूर्णन बृहस्पति सबसे धीमा घूर्णन शुक्र 249 दिन।
- सबसे तेज परिक्रमण वर्ष की अवधि बुध 88 दिन सबसे धीमा शुक्र 164 साल।
- सबसे गर्म ग्रह शुक्र सबसे ठंडा ग्रह अरुण वरुण है।

Gold lock zone

- अंतरिक्ष का वह स्थान जहां जीवन की संभावना पाई जाती है उसे गोल्डी लॉक्स जोन कहते हैं।
- केवल पृथ्वी पर जीवन संभव है।
- मंगल पर इसकी संभावना है।
- जीवन की उत्पत्ति के लिए कपास का पौधा अंतरिक्ष पर भेजा गया।

बुध ग्रह (मरकरी)

- इसका नामकरण रोमन संदेशवाहक देवता के नाम पर हुआ है।
- इस ग्रह का वायुमंडल नहीं है किन्तु बहुत ही कम मात्रा में वहां ऑक्सीजन पाई जाती है।
- वायुमंडल ना होने के कारण यह ऊष्मा को रोक नहीं पाता है। जिस कारण दिन में इसका तापमान 420 डिग्री सेल्सियस तथा रात को -180 डिग्री सेल्सियस तापमान हो जाता है अर्थात् इस ग्रह पर सर्वाधिक तापांतर 600 डिग्री सेल्सियस का देखा जाता है अतः यहां जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।
- वायुमंडल ना होने के कारण इस ग्रह पर सर्वाधिक उल्का पात हुआ है।
- सबसे बड़ा क्रेटर कोरोलिस बेलिस है।

शुक्र

- इस ग्रह पर सर्वाधिक मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड पाया जाता है।
- यह सूर्य से आने वाली सभी ऊष्मा को अवशोषित कर लेता है।
- इसे सबसे गर्म तथा चमकीला ग्रह कहते हैं।
- इसे सौरमंडल की परी कहते हैं।
- इस पर प्रेशर कुकर के समान स्थिति पाई जाती है जिस कारण इसे दम घुटने वाला कहते हैं।
- यह पृथ्वी से समानता रखता है अतः इसे पृथ्वी का सहोदर, भगिनी, जुड़वा बहन कहते हैं।
- यह अपने अक्ष पर उल्टा अर्थात् पूर्व से पश्चिम घूमता है जिस कारण यहां सूर्योदय पश्चिम में होता है।
- यह अपने अक्ष पर 243 दिन में घूर्णन कर लेता है। जबकि सूर्य का परिक्रमण 224 दिन में पूरा करता है।
- अर्थात् इस ग्रह का घूर्णन और परिक्रमण समान है।
- अर्थात् इस ग्रह पर एक दिन। वर्ष के बराबर होगा।
- बुध तथा शुक्र के पास उपग्रह नहीं है इसके उपग्रह को सूर्य खींच लेता है।

भोर तथा सांझ का तारा

- भोर तथा सांझ में प्रकाश काम रहता है। इसी कारण सूर्य से जब प्रकाश आता है तो बुध तथा शुक्र से टकराकर परिवर्तित होता है।
- इस परिवर्तित प्रकाश के कारण बुध तथा शुक्र चमकीले दिखते हैं जिससे शुक्र निकट होने के कारण अधिक चमकीला दिखता है।
- बुध एवं शुक्र दोनों को भोर तथा सांझ का तारा कहते हैं।

मंगल

- इस पर Tron ऑक्साइड की अधिकता है। जिस कारण यह लाल दिखता है
- यह 25 डिग्री पर झुका हुआ है। जिस कारण इस पर पृथ्वी के समान ऋतु परिवर्तन देकर जाते हैं।
- इस ग्रह पर जीवन की संभावना सर्वाधिक है।
- इस ग्रह पर पूरे सौरमंडल का सबसे ऊंचा पर्वत मिक्स ओलंपिया है जिसकी ऊंचाई 30000 किलोमीटर है जो माउंट एवरेस्ट के 3 गुना से भी अधिक ऊंचा है।

बृहस्पति

- यह सबसे बड़ा ग्रह है, किन्तु यह गैसीय अवस्था में है।
- इस पर सल्फर डाइऑक्साइड की अधिकता है जिस कारण यह हल्का पीला दिखता है।
- यह एकमात्र ग्रह है जो हिमरहित है।
- यह अपने अक्ष पर सबसे तेज घूर्णन करता है। जो लगभग 9:30 घंटे में पूरा कर लेता है।
- बृहस्पति के 73 उपग्रहों में से केवल 16 उपग्रहों को ही मान्यता प्राप्त है।
- इसका सबसे बड़ा उपग्रह गैनीमेड है।
- बृहस्पति के अत्यधिक विशालता के कारण इसे तारा सदृश्य ग्रह कहते हैं।

शनि ग्रह

- यह सबसे कम घनत्व वाला ग्रह है।
- इसका घनत्व 0.7 gmlcm^3 है।
- कम घनत्व के कारण यह ह पानी में नहीं डूबेगा इस ग्रह के चारों ओर 7 छल्ले हैं।
- जिन्हें ए,बी,सी, डी, ई,एफ,जी कहते हैं। यह वलय इसी ग्रह का टुकड़ा है जो शनि के गुरुत्वाकर्षण के कारण इसी के समीप रहता है।
- इन छल्लों के कारण ही शनि को आकाशगंगा सदृश ग्रह कहते हैं।
- शनि के 62 उपग्रह में से 21 उपग्रहों को मान्यता प्राप्त है।
- अतः सर्वाधिक उपग्रह वाला ग्रह की संख्या में शनि का स्थान प्रथम हो जाता है।

अरुण

- इसे अक्ष पर अत्यधिक झुकाव के कारण लेटा हुआ ग्रह कहते हैं।
- द्वितीय लेटा हुआ ग्रह शुक्र को कहते हैं।
- इसे आधुनिक ग्रह भी कहते हैं।

- इस पर मीथेन की अधिकता के कारण यह हल्का हरा दिखता है।
- यह अपने अक्ष पर उल्टा घूर्णन करता है।
- जिस कारण वहां सूर्योदय पश्चिम से होता है।
- इस ग्रह के भी बाहर पांच वलय घूमते हैं
- इसके 15 उपग्रह हैं जिनमें **ट्रिटोनिया** सबसे बड़ा है।

वरुण - यह सबसे दूरी पर स्थित ग्रह है।

- यह सूर्य का परिभ्रमण लगभग 164 वर्ष में पूरा करता है।
- इस पर भी मिथेन की अधिकता है। जिससे यह नीला दिखता है।
- इसलिए इसे अरुण का भाई भी कहते हैं इसके 8 उपग्रह हैं जिसमें ट्रिटॉन सबसे प्रमुख है।
- ग्रह द्वारा सूर्य का चक्कर लगाना परिक्रमण कहलाता है परिक्रमण के कारण ही वर्ष की घटना होती है।
- अपने ही अक्ष पर चक्कर लगाना घूर्णन कहलाता है दिन और रात की घटनाएं घूर्णन के कारण होती हैं।

वार	परिक्रमण	परिभ्रमण
बुध	88 दिन	59 घंटा
शुक्र	224 दिन	243 घंटा
पृथ्वी	365 दिन	24 घंटा
मंगल	687 Day	25 घंटा
बृहस्पति	12 year	9.5 घंटा
सनी	29 year	10 घंटा
अरुण	84 year	18 घंटा
वरुण	165 year	18 घंटा

ग्रहों के रंग

1. बुध - Grey
2. शुक्र - yellow
3. पृथ्वी - Blue
4. मंगल - Radish Brown
5. बृहस्पति - Orange + White
6. Sani - Gold
7. अरुण - Blue + Brown
8. Varun - Blue

दूसरे ग्रहों पर भेजे गए कृत्रिम उपग्रह

1. सूर्य - पारकर, पाइनियर, आदित्य
 2. बुध - मेरीनर, मेसेंजर
 3. शुक्र - वेनेश, मेगलन
 4. पृथ्वी - स्तूपनिक
 5. मंगल - fobos, curiosity rover
 6. बृहस्पति - गैलीलियो
 7. शुद्ध ग्रह - Grespa, Eros
- मानव द्वारा भेजा गया पहला उपग्रह पृथ्वी की कक्षा में गया। जो स्तूपनिक था, जबकि किसी अन्य ग्रह पर भेजा गया,

29.	सेण्ट्रल बोर्नियो रेंज	मध्य बोर्नियो	कीनाबालू	4,101	1,130
30.	टीहामाट ऐश शाम	द० प० अरेबिया	जेबेल हाधार	3,760	1,130
31.	अपेन्निनी	इटली	कोर्नो ग्रॅण्डे	2,931	1,130
32.	एप्लेशियन्स	पू० सं० रा० अमेरिका- कनाडा	माउण्ट मिचेल	2,037	1,130
33.	अल्पा या आल्प्स	मध्यवर्ती यूरोप	माउण्ट ब्लैक	4,807	1,050
34.	सियरा माद्रे डेल सुर	मैक्सिको	टियोटेपेक	3,703	965
35.	खेबेट कोलिम्स्की	पूर्वी रूस	-	2,221	965
36.	अरावली श्रेणी	पश्चिमोत्तर भारत	गुरुशिखर	1,722	800

➤ पठार (Plateau) :-

- पठार उठी हुई एवं सपाट भूमि होती है। यह आस-पास के क्षेत्रों से अधिक उठा हुआ होता है, तथा इसका ऊपरी भाग मेज के समान सपाट होता है।
- किसी पठार के एक या एक से अधिक किनारे होते हैं, जिनके ढाल खड़े होते हैं। पठारों की ऊँचाई प्रायः कुछ सौ मीटर से लेकर कई हजार मीटर तक हो सकती है।
- पर्वतों की तरह पठार भी नये या पुराने हो सकते हैं। भारत में दक्कन पठार पुराने पठारों में से एक है। केन्या, तंजानिया तथा युगांडा का पूर्वी अफ्रीकी पठार एवं ऑस्ट्रेलिया का पश्चिमी पठार इस प्रकार के उदाहरण हैं।
- तिब्बत का पठार विश्व का सबसे ऊँचा पठार है, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से 4,000 से 6000 मीटर तक है।
- पठार बहुत उपयोगी होते हैं, क्योंकि उनमें खनिजों की प्रचुरता होती है। यही कारण है कि विश्व के बहुत से खनन क्षेत्र पठारी भागों में स्थित हैं।
- अफ्रीका का पठार सोना एवं हीरों के खनन के लिए प्रसिद्ध है। भारत में छोटानागपुर के पठार में लोहा, कोयला तथा मैंगनीज के बहुत बड़े भंडार पाए जाते हैं।
- पठारी क्षेत्रों में बहुत से जलप्रपात हो सकते हैं, क्योंकि यहाँ नदियाँ ऊँचाई से गिरती हैं।

- भारत में, छोटानागपुर पठार पर स्वर्णरेखा नदी पर स्थित हुंडर जलप्रपात तथा कर्नाटक में जोग जलप्रपात, इस प्रकार के जलप्रपातों के उदाहरण हैं।
- लावा पठार में काली मिट्टी की प्रचुरता होती है, जो उपजाऊ है एवं खेती के लिए काफी अच्छी होती है। कई पठारों में रमणीय स्थल होते हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।
- सामान्यतः पठार की ऊँचाई 300 से 500 फिट होती है। कुछ अधिक ऊँचाई वाले पठार हैं - तिब्बत का पठार (16,000 फीट), बोलिविया का पठार (12,000 फीट), कोलम्बिया का पठार (7,800 फीट)।

पठार निम्न प्रकार के होते हैं -

- अंतर्पर्वतीय पठार** : पर्वतमालाओं के बीच बने पठार।
- पर्वतपदीय पठार** : पर्वत तल व मैदान के बीच उठे समतल भाग।
- महाद्वीपीय पठार** : जब पृथ्वी के भीतर जमा लैंकोलिथ भू-पृष्ठ अपरदन के कारण सतह पर उभर आते हैं, तब ऐसे कठोर पठार बनते हैं; जैसे - दक्षिण का पठार।
- तटीय पठार** : समुद्र के तटीय भाग में स्थित पठार।
- गुंबदाकार पठार** : चलन क्रिया के फलस्वरूप निर्मित पठार; जैसे - रामगढ़ गुंबद (भारत)।

विश्व के प्रमुख पठार

क्र.सं.	नाम	स्थिति	विशेषताएँ
1.	ग्रीनलैंड का पठार	ग्रीनलैंड द्वीप (अटलांटिक महासागर के उत्तर)	21,75,600 (वर्ग किमी. तक विस्तृत)
2.	अलास्का का पठार	यूकन का पठार (संयुक्त राज्य अमेरिका)	900 से 1200 मीटर तक ऊँचा
3.	कोलम्बिया का पठार	संयुक्त राज्य अमेरिका (ओरेगान, वाशिंगटन तथा इडाहो राज्य)	4,62,500 वर्ग किमी. तक विस्तृत

4.	ग्रेट बेसिन का पठार	संयुक्त राज्य अमेरिका (ओरेगान, नेवादा, उटा इडाहो राज्य)	5,25,000 वर्ग किमी. तक विस्तृत
5.	कोलोरेडो का पठार	संयुक्त राज्य अमेरिका (युटाह एवं एरीजोना राज्य)	1500 से 3000 मीटर ऊँचा
6.	मेक्सिको का पठार	मेक्सिको (पश्चिमी सियारामादे और पूर्वी सियारामादे पर्वत श्रेणी के मध्य स्थित है।	
7.	चियापास का पठार	दक्षिणी मेक्सिको (प्रशांत महासागर के तट पर स्थित	
8.	ब्राजील का पठार	ब्राजील (दक्षिणी अमेरिका के मध्य पूर्वी भाग में यह पठार त्रिभुजाकार रूप में स्थित है।	
9.	बोलीविया का पठार	यह बोलीविया के एण्डीज पर्वतमाला क्षेत्र में विस्तृत रूप में फैला हुआ है।	800 किमी. लंबा, तथा 128 किमी. चौड़ा और इसकी औसत ऊँचाई 3,110 मीटर है।
10.	मेसेटा का पठार	स्पेन का आइबेरियन प्रायद्वीप पर मेसेटा का पठार स्थित है।	610 मीटर औसत ऊँचाई
11.	तिब्बत का पठार	मध्य एशिया में (हिमालय के उत्तर और क्युनलुन पर्वत के दक्षिण में स्थित है।	4000 से 5000 मीटर तक की ऊँचाई
12.	मंगोलिया का पठार	उत्तरी मध्य चीन तथा मंगोलिया गणराज्य में स्थित है।	
13.	यूनान का पठार (इंडोचाइना का पठार)	म्यांमार का शान प्रदेश चीन, एवं वियतनाम	
14.	ईरान का पठार (एशिया माइनर का पठार)	ईरान	900 से 1500 मीटर औसत ऊँचाई
15.	अरब का पठार	दक्षिण-पश्चिम एशिया में स्थित है इसके पूर्व में फारस की खाड़ी, पश्चिम में लाल सागर, उत्तर-पश्चिम में भूमध्य सागर, और दक्षिण में अरब सागर स्थित है।	
16.	टर्की का पठार (अनातोलिया का पठार)	टर्की	
17.	दक्षिण का पठार (प्रायद्वीप भारतीय का पठार)	दक्षिण भारत	1200 मी से अधिक ऊँचाई (केंद्रीय भारत को छोड़कर)
18.	एबीसीनिया का पूर्वी पठार (इथियोपिया का पठार)	पूर्वी अफ्रीका, इथियोपिया एवं सोमालिया में विस्तृत)	-
19.	दक्षिण अफ्रीका का पठार	दक्षिण अफ्रीका का केप प्रांत, नेटाल तथा वसूतोलैंड	
20.	मालगासी का पठार (मेडागास्कर का पठार)	संपूर्ण मेडागास्कर द्वीप का मध्यवर्ती भाग	1000 से 1500मी. औसत ऊँचाई
21.	ऑस्ट्रेलिया का पठार	ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप का लगभग आधा पश्चिम भाग	1200मी. तक ऊँचा

❖ झीलों के प्रकार

1. बनावट के आधार पर

- (i) **प्राकृतिक झीलें** - ईरी, ओण्टेरियो, सुपीरियर, मिशीगन (संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा); बैकाल (रूस); डल, वूलर (भारत); टांगानीका (तंजानिया-मलावी- काँगो); विक्टोरिया (तंजानिया केन्या-युगाण्डा); कैस्पियन सागर (यूरेशिया)
- (ii) **कृत्रिम झीलें** - गोविन्द सागर, जयसमंद (भारत); नासिर (मिस्र)

2. उत्पत्ति के आधार पर

- (i) ज्वालामुखी झीलें - लोनार (भारत); टाहो (कैलिफोर्निया); ताना (Crater Lakes) (इथियोपिया)
- (ii) भ्रंशघाटी झील - टांगानीका (तंजानिया-केन्या-युगाण्डा); मृत सागर (इजराइल-जॉर्डन)
- (iii) महाद्वीपीय ट्रोण्णी झील (Continental Trough Lakes) - बैकाल (रूस)
- (iv) वलन द्वारा निर्मित झीलें - जेनेवा झील (स्विट्जरलैंड)
- (v) भूकम्प द्वारा निर्मित झीलें - रीलफुल-घाटी, टेनेसी (संयुक्त राज्य अमेरिका)

3. अपरदन द्वारा निर्मित झीलें

- (i) नदी निर्मित झीलें लोनी, डर्ग (उत्तरी आयरलैंड)
- (ii) हिमानी निर्मित झीलें बास (संयुक्त राज्य अमेरिका); नैनीताल (भारत)
- (iii) वायु निर्मित झीलें चाड (चाड); सांभर (भारत)

4. निक्षेपण द्वारा निर्मित झीलें

- (i) जलोढ़ पंख झीलें - ओवेन्स (संयुक्त राज्य अमेरिका)
- (ii) बाढ़ प्रदेश की झीलें - बिलिवोग (ऑस्ट्रेलिया)
- (iii) डेल्टा झीलें - मेरीगोट (नाइजर नदी), मायेह (नील नदी), बेबोन (मिसिसिपी नदी)
- (iv) हिम बाँध झीलें - मार्जलेन सागर (स्विट्जरलैंड)
- (v) हिमोढ़ झीलें - ग्राण्ड झील (संयुक्त राज्य अमेरिका); गार्डी कोमो (आल्प्स पर्वत)

झीलों से संबंधित तथ्य

- लोपनोर झील चीन में अवस्थित है, यहाँ पर चीन का परमाणु परीक्षण संस्थान है।
- कनाडा में अथावस्का झील के समीप यूरेनियम सिटी स्थित है।
- हूबर तथा बोल्डर नामक कृत्रिम झील कोलोरेडो नदी पर निर्मित की गई है।
- कनाडा की ग्रेट बेयर झील से आर्कटिक वृत्त होकर गुजरता है।
- विश्व की सबसे ऊँचाई पर स्थित झील टिसो सिकर (तिब्बत) है।

विश्व की प्रमुख झीलें

नाम	संबंधित क्षेत्र	क्षेत्रफल (वर्ग किमी में)
कैस्पियन सागर झील	पूर्व सोवियत संघ तथा ईरान	3,93,898
सुपीरियर झील	संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा	82,103
विक्टोरिया झील	केन्या, युगाण्डा तथा तंजानिया	69,485
अरल सागर झील	उज्बेकिस्तान तथा कजाकिस्तान	68,682
हूरन झील	संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा	59,570
मिशीगन झील	संयुक्त राज्य अमेरिका	57,757
टांगानीका झील	तंजानिया, जाम्बिया तथा काँगो	32,893
बैकाल झील	रूस	31,492
ग्रेट बियर झील	कनाडा	31,328
ग्रेट स्लेव झील	कनाडा	28,570
ईरी झील	संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा	25,667
विनीपेग झील	कनाडा	24,390
मलावी झील	मलावी तथा मोजाम्बिक	23,310
ओण्टेरियो झील	संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा	19,011
बाल्खश झील	कजाकिस्तान	18,428
लडॉगा झील	रूस	18,130
चाड झील	नाइजीरिया, नाइजर तथा चाड कैमरून	15,540
ओनेगा झील	रूस	9,891
टिटिकाका झील	पेरू तथा बोलिविया	8,135
निकारा गुआ झील	निकारागुआ	8,001
अथावस्का झील	कनाडा	7,920
स्डोल्फ झील	केन्या	6,405
रेन्डियर झील	कनाडा	6,330
आयर झील	ऑस्ट्रेलिया	6,216

अध्याय - 9

प्रमुख उद्योग

- USA की सिलिकॉन वैली सेन-फ्रांसिस्को (उत्तरी कैलीफोर्निया) में स्थित है।
- ओसाका नगर जापानी सूती वस्त्र उद्योग (cotton textile industry) का प्रमुख केन्द्र है।
- सूती वस्त्र उद्योग के लिए आर्द्र जलवायु तथा समुद्री समीर उपयुक्त मानी जाती है।
- विश्व में सूती वस्त्र उत्पादक सबसे बड़ा देश चीन है।
- रूर बेसिन (ruhr basin) जर्मनी देश का प्रसिद्ध औद्योगिक क्षेत्र है।
- ऊन (wool) का सबसे बड़ा उत्पादक देश चीन है।
- विश्व में पोटाश उर्वरक का सर्वाधिक भंडार कनाडा देश में स्थित है।

औद्योगिक शहरों के उपनाम

औद्योगिक शहरों	उपनाम
गोर्की	रूस का डेट्रायट
पीथमपुर	भारत का डेट्रायट
ट्यूरिन	इटली का डेट्रायट
विंडसर	कनाडा का डेट्रायट
नागोया	जापान का डेट्रायट
शंघाई	चीन का मेनचेस्टर
अहमदाबाद	भारत का मेनचेस्टर
मिलान	इटली का मेनचेस्टर
ओसाका	जापान का मेनचेस्टर
कानपूर	उत्तर भारत का मेनचेस्टर
कोयम्बटूर	दक्षिण भारत का मेनचेस्टर
पिट्सबर्ग	विश्व की इस्पात नगरी
यावता	जापान का पीट्सबर्ग
टूला	रूस का पिट्सबर्ग
जमशेदपुर	भारत का पीट्सबर्ग
हैमिल्टन	कनाडा का बर्मिंघम

विश्व के प्रमुख औद्योगिक केंद्र

देश	लौह उद्योग के प्रमुख केंद्र
स.रा.अमेरिका	पीट्सबर्ग (विश्व की इस्पात राजधानी)
जापान	ओसाका, कोबे व क्योटो, नागासाकी, कावासाकी
रूस	मॉस्को, मॅग्नितोगोस्क, चेलियाविंस्क, टूला

देश	वस्त्र उद्योग के प्रमुख केंद्र
चीन	शंघाई, कैंटन, वुहान, नानकिंग, चुंगकिंग, बीजींग
ब्रिटेन	मेनचेस्टर, ब्रैडफोर्ड, डबीशायर, लीड्स
भारत	मुंबई, अहमदाबाद, कोलकाता, कोयम्बटूर, मदुरै

भारतीय उद्योग (Indian Industry)

1. स्वतंत्रता से पूर्व भारत में स्थापित उद्योग-

- लौह इस्पात उद्योग:- 1874 में कुल्टी (प. बंगाल) में पहला व्यवस्थित लौह इस्पात केन्द्र स्थापित किया गया।
- एल्युमिनियम उद्योग:- 1837 में जे.के. नगर (प. बंगाल) में पहला एल्युमिनियम उद्योग स्थापित किया गया।
- सीमेन्ट उद्योग:- भारत में प्रथम सीमेंट कारखाना वर्ष 1904 में गुजरात के पोर्बंदर में स्थापित किया गया, परंतु सीमेंट का उत्पादन वर्ष 1904 में चेन्नई में स्थापित कारखाने में प्रारंभ हुआ।
- रसायनिक उद्योग:- भारत में रसायनिक उद्योग की शुरुआत 1906 में रानीपेट (तमिलनाडु) में सुपर फॉस्फेट के यंत्र के साथ हुई।
- जहाजरानी उद्योग:- 1941 में विशाखापट्टनम में पहला जहाजरानी उद्योग लगाया गया जिसका नाम हिन्दुस्तान शिपयार्ड था।
- सुती वस्त्र उद्योग:- 1818 में कोलकाता में प्रथम सुती वस्त्र मील की स्थापना की गई जो असफल रही। 1854 में मुंबई में प्रथम सफल सुती वस्त्र मील की स्थापना डाबर द्वारा की गई।
- जूट उद्योग:- जूट उद्योग की स्थापना 1854 में रिशरा (कोलकाता) में की गई।
- ऊनी वस्त्र उद्योग:- भारत में पहली ऊनी वस्त्र मील की स्थापना 1876 में कानपुर में की गई।
- वर्ष 1951-52 में GDP में औद्योगिक क्षेत्र का भाग 16.6 प्रतिशत था जो कि वर्ष 2016-17 में बढ़कर 29.02 प्रतिशत हो गया तथा वर्तमान में यह लगभग 31 प्रतिशत है।

भारत के प्रमुख विनिर्माण उद्योग

लौह इस्पात उद्योग:-

- वर्ल्ड स्टील एसोसिएशन 2018 की रिपोर्ट के अनुसार लौह इस्पात उत्पादन में भारत चीन व अमेरिका के बाद तीसरे स्थान पर है।
- 2003 के बाद से भारत स्पंज आयरन का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादन करता है।
- फरवरी 2018 से भारत कच्चे इस्पात के उत्पादन में जापान को पीछे छोड़कर दूसरे पायदान पर आ गया है।
- इस उद्योग में कच्चे माल के रूप में लौह अयस्क, मैंगीज, चूना पत्थर, कुकिंग कोयला एवं डोलोमाइट का प्रयोग किया जाता है।
- 1907 में साकची, झारखण्ड में जमशेदजी टाटा द्वारा लौह इस्पात उद्योग टाटा आयरन व स्टील कंपनी (TISCO) की स्थापना की गई। इसे भारत में आधुनिक लौह इस्पात की शुरुआत माना जाता है।
- भारत में पहली बार 1874 में कुल्टी, पं.बंगाल में 'बंगाल आयरन वर्क्स' की स्थापना हुई, जो अब बंगाल लौहा व इस्पात उद्योग में बदल गया है।

- 1907 में जमशेदपुर में TISCO भारत में स्थापित पहली नीजी क्षेत्र की लौह इस्पात उद्योग की इकाई बनी।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में लगाए गए कारखाने -

- राउरकेला (ओडिशा):- जर्मनी के सहयोग से स्थापित (1955 में स्थापना, 1959 से उत्पादन शुरू)
- भिलाई (छत्तीसगढ़):- रूस के सहयोग से स्थापित (1955 में स्थापना, 1959 से उत्पादन शुरू)
- दुर्गापुर (प. बंगाल):- ब्रिटेन के सहयोग से स्थापित (1959 में स्थापना, 1962 से उत्पादन शुरू)

नोट:- तीसरी पंचवर्षीय योजना में रूस की सहायता से 1966 में बोकारो (झारखण्ड) में लौह इस्पात कारखाने की स्थापना की गई।

1974 में सरकार ने स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAIL) की स्थापना की तथा इसे इस्पात उद्योग के विकास की जिम्मेदारी दी गई। 'सेल' के अधीन एकीकृत इस्पात संयंत्रों की संख्या अब आठ (भिलाई, दुर्गापुर, राउरकेला, बोकारो, इस्को, विश्वेश्वरैया, विशाखापट्टनम एवं सलेम) हो गई है।

सीमेंट उद्योग:-

- वर्तमान में भारत सीमेंट उत्पादन में चीन के बाद विश्व में दूसरा स्थान रखता है।
- देश में आधुनिक सीमेंट बनाने का कारखाना 1904 में चेन्नई में शुरू हुआ।
- यह एक भार हासी उद्योग है जिसमें एक टन उत्पादन के लिए 2.02 टन कच्चे माल की आवश्यकता होती है, जिसमें 1.6 टन केवल चूना पत्थर होता है।
- इसके अपशिष्ट पदार्थ स्लैग कहलाते हैं।
- मध्य प्रदेश में चूना पत्थर के सर्वाधिक संचित भण्डार होने कारण इस उद्योग का सर्वाधिक विकास मध्य प्रदेश में हुआ है।
- सीमेंट उद्योग के सर्वाधिक कारखाने आंध्रप्रदेश में हैं।
- सीमेंट उद्योग के सर्वाधिक कारखाने आंध्रप्रदेश में हैं।

रासायनिक उर्वरक उद्योग:-

- हरित क्रांति को सफल बनाने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान इसी उद्योग का रहा।
- भारत नाइट्रोजन उत्पादकों का दूसरा सबसे बड़ा तथा फॉस्फेट उर्वरकों का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
- भारत में पोटैश उर्वरकों का उत्पादन नहीं होता है।
- रासायनिक उर्वरकों के अन्तर्गत तीन प्रकार के उर्वरकों का उत्पादन होता है -
- नाइट्रोजन, फॉस्फेटिक व पोटैश उर्वरक
- भारत की जलोढ़ मृदा में नाइट्रोजन की कमी के कारण यहाँ नाइट्रोजन उर्वरक की मांग व उत्पादन अधिक होता है।
- भारत में मुख्यतः 2 प्रकार के उर्वरकों का उत्पादन किया जाता है -

- (1) नाइट्रोजन आधारित उर्वरक
- (2) फॉस्फोरस आधारित उर्वरक

भारत का पहला उर्वरक कारखाना 1906 में रानीपेट (तमिलनाडु) में स्थापित किया गया।

- 1961 में भारतीय उर्वरक निगम की स्थापना की गई।

प्रमुख रासायनिक उर्वरक कंपनियाँ -

- फर्टीलाइजर कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लि.(FCI)- सिंदरी, गोरखपुर, तालचेट व रामागुण्डम।
- राष्ट्रीय केमिकल्स व फर्टीलाइजर्स लि.(RCF) ट्राम्बे व थाल (महाराष्ट्र)।
- इंडियन फार्मर्स फर्टीलाइजर कॉर्पोरेटिव लि.(IFFCO) कलोल व कांडला (गुजरात), फूलपुर व आंवला (उत्तर प्रदेश)।
- कृषक भारती कॉर्पोरेटिव लि. (कृभको) - हजीरा।

पेट्रो रासायन उद्योग:-

- इसे चार भागों में विभाजित किया सकता है -;
- (1) पॉलीमर/प्लास्टिक
- (2) कृत्रिम रेशा/सिंथेटिक रेशा
- (3) औषधि निर्माण / कीटनाशक निर्माण / रंगने के पदार्थ/ कृत्रिम डिटर्जेंट निर्माण
- (4) पटाखा उद्योग
- देश में सर्वाधिक पेट्रो रासायन का उत्पादन गुजरात में होता है।
- यह उद्योग भारत में नवीन है।
- इसका पहला संयंत्र निजी क्षेत्र में यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड द्वारा 1966 में ट्राम्बे में स्थापित किया गया।
- भारत में सार्वजनिक क्षेत्र में प्रथम कारखाना इंडियन पेट्रो केमिकल्स लि., बड़ोदरा में 1969 में स्थापित किया गया।

सूती वस्त्र उद्योग:-

- यह भारत का सबसे बड़ा उद्योग भी है जो रेलवे के बाद सबसे ज्यादा रोजगार देता है।
- औद्योगिक उत्पादन में इसका योगदान 14 प्रतिशत है।
- भारतीय पूंजी से प्रथम सफल कारखाना बम्बई स्पिनिंग एण्ड वीविंग कंपनी कवास जी नानाभाई डाबर ने सन् 1854 में मुंबई में लगाया।
- मुंबई को सूती वस्त्र उद्योग की राजधानी (कॉटनपोलिश ऑफ इंडिया) कहा जाता है।
- अहमदाबाद को भारत का मैनचेस्टर व पूर्व का बोस्टन कहा जाता है।
- कानपुर को उत्तर भारत का मैनचेस्टर कहा जाता है।
- सूरत जरी के कार्य के लिए जाना जाता है।
- भारत का पहला टेक्सटाइल पार्क जयपुर के निकट बगर में प्रारंभ हुआ।
- तमिलनाडु में देश के कुल मिल सूती वस्तु उत्पादन का 45 प्रतिशत सुत का उत्पादन में होता है।
- कोयम्बटूर को दक्षिण भारत का मैनचेस्टर कहा जाता है।
- बुनकरों को अच्छी सेवाएँ देने व 24 घंटे आवश्यक सूचनाएँ उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से ई-धागा एप की शुरुआत की गई। यह एप 10 भाषाओं में उपलब्ध है।

- बंगाल का अंतिम गवर्नर-जनरल - विलियम बैंटिक
- भारत का प्रथम गवर्नर-जनरल - विलियम बैंटिक
- भारत का अंतिम गवर्नर-जनरल - लॉर्ड कैनिंग
- भारत के प्रथम वायसराय - लॉर्ड कैनिंग
- भारत के अंतिम वायसराय - लॉर्ड माउंटबेटन
- स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर-जनरल - लॉर्ड माउंटबेटन
- भारत का प्रथम भारतीय गवर्नर-जनरल - सी. राजगपालचारी

Note :-

- 1858 से भारत के गवर्नर-जनरल को गवर्नर-जनरल तथा वायसराय दोनों नामों से जाना जाने लगा।

अध्याय - 2

1857 ई. का विद्रोह

1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन

राजनीतिक - धार्मिक आंदोलन

फकीर विद्रोह (1776-77)

- यह विद्रोह बंगाल में विचरणाशील मुसलमान धार्मिक फकीरों द्वारा किया गया था।
- इस विद्रोह के नेता मजनु शाह ने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती देते हुए जमींदारों और किसानों से धन इकठ्ठा करना आरम्भ कर दिया।
- मजनु शाह की मृत्यु के बाद चिराग अली शाह ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया।

संन्यासी विद्रोह (1770 - 1820)

- संन्यासी विद्रोह भारत की आज़ादी के लिए बंगाल में अंग्रेज़ हुकूमत के विरुद्ध किया गया एक प्रबल विद्रोह था।
- संन्यासियों में अधिकांश शंकराचार्य के अनुयायी थे।
- इतिहास प्रसिद्ध इस विद्रोह की स्पष्ट जानकारी बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास 'आनन्दमठ' में मिलती है।

पागलपंथी विद्रोह (1813 - 33)

- उत्तर पूर्वी भारत में प्रभावी पागलपंथी एक धार्मिक पंथ था।
- उत्तर पूर्वी क्षेत्र में हिन्दू मुसलमान और गारो तथा जांग आदिवासी इस पंथ के समर्थक थे।
- इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा क्रियान्वित भू-राजस्व तथा प्रशासनिक व्यवस्था के कारण व्यापक असंतोष था।
- इस विद्रोह को 1833 ई. में दबा दिया गया।

वहाबी आंदोलन (1820 - 70)

- वहाबी आंदोलन मूलतः एक इस्लामिक सुधारवादी आंदोलन था। जिसने कालांतर में मुस्लिम समाज में व्याप्त अन्धविश्वास एवं कुस्तियों के उन्मूलन को अपना उद्देश्य बनाया।
- इस आंदोलन के संस्थापक अब्दुल वहाबी के नाम पर इसका नाम वहाबी आंदोलन पड़ा।
- सैयद अहमद बरेलवी ने भारत में इस आंदोलन को प्रेरणा प्रदान की।

कूकाविद्रोह

- कूका विद्रोह की शुरुआत पंजाब में 1860-1870 ई. में हुई थी।
- पश्चिमी पंजाब में 'कूका विद्रोह' की शुरुआत लगभग 1840 ई. में 'भगत जवाहर मल' द्वारा की गयी थी।
- भगत जवाहर मल को 'सियान साहब' के नाम से भी जाना जाता था।
- 1872 ई. में इसके एक नेता 'रामसिंह' को रंगून निर्वासित कर दिया और आंदोलन पर नियंत्रण पा लिया गया।

समोसी विद्रोह

- समोसी मराठा राज्य के अधीनस्थ कर्मचारी थे। अत्यधिक लगान वसूली के कारण 1822 में उन्होंने विद्रोह कर दिया।

गडकरी विद्रोह

- गडकरी विद्रोह अंग्रेजों के खिलाफ किया गया था।
- 1844 ई. में महाराष्ट्र में 'गडकरी जाति' के विस्थापित सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध इस विद्रोह को अंजाम दिया।

सावंतवादी विद्रोह

- प्रवासीवादी विद्रोह: प्रवासीवादी विद्रोह भारतीयों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ शुरू किया गया था।
- प्रवासीवादी विद्रोह 1844 में हुआ था।
- प्रवासीवादी विद्रोह का नेतृत्व मराठा सरदार फोन्ड सावन्त ने किया था।

मुंडा एवं हो विद्रोह (1820-22)

कोल विद्रोह (1831)

- 1831 में छोटा नागपुर में यह कोल विद्रोह हुआ।
- इस विद्रोह का प्रमुख कारण कोल आदिवासियों की जमीन छीनकर मुस्लिम और सिख संप्रदाय के किसानों को दे दी। इस विद्रोह में गंगा नारायण और बुद्धो भगत ने भूमिका निभाई।
- यह विद्रोह मुख्य रूप से रांची हजारीबाग पलामू मानभूम और सिंह भूमि क्षेत्र में फैला।

संथाल विद्रोह (1855)

- सन् 1855 ईस्वी में जमींदार और साहूकारों के अत्याचार और भूमि कर अधिकारियों के दमनात्मक व्यवहार के प्रति सिद्ध एवं कान्हू के नेतृत्व में राजमहल एवं भागलपुर के संस्थान आदिवासियों ने विद्रोह कर दिया।

चुआर विद्रोह (1798)

- दुर्जन सिंह तथा जगन्नाथ के नेतृत्व में बंगाल के मिदनापुर जिले में 1798 ईस्वी में यह विद्रोह हुआ।
- इस विद्रोह का मुख्य कारण भूमि कर एवं अकाल के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट था। इस विद्रोह में यह विद्रोह रुक रुक कर 30 वर्षों तक चला।

खासी विद्रोह

- भारत के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में जब अंग्रेजों ने खासी की पहाड़ियों से लेकर सिलहट के बीच सड़क मार्ग बनाना प्रारंभ किया तो स्थानीय लोगों ने इसे ब्रिटिश राज्य का उनकी स्वतंत्रता पर हस्तक्षेप मानते हुए विद्रोह किया।

अहोम आदिवासी विद्रोह (1828)

- यह ब्रिटिश सरकार ने 1828 ईस्वी में असम राज्य के अहोम प्रदेश को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने का प्रयत्न किया तो अहोम आदिवासियों ने गोमधर कुंवर के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया।

फरायजी विद्रोह (1838)

- बंगाल के फरीदपुर नामक स्थान पर फरायजी संप्रदाय के अनुमोदन पर शरीयातुल्ला ने इस विद्रोह का नेतृत्व किया।

पश्चिम भारत के प्रमुख आदिवासी विद्रोह

भील विद्रोह (1818)

- 1818 में भील विद्रोह का प्रारंभ हुआ यह भारत के पश्चिमी क्षेत्र में हुआ।
- इस विद्रोह का मुख्य कारण कृषि से संबंधित परेशानियाँ और अंग्रेजों द्वारा लगाए जाने वाले टैक्स थे।
- 1825 ईस्वी में सेवाराम के नेतृत्व में भीलों ने पुनः विद्रोह किया। कार 1846 ई. तक भील विद्रोह चलता रहा,
- भील विद्रोह को भड़काने का आरोप ईस्ट इंडिया कंपनी ने पेशवा बाजीराव द्वितीय और त्र्यंबक जी पर लगा दिया।

बघेरा विद्रोह

- यह विद्रोह ओखा मंडल के बघेरा लोगों द्वारा सन् 1818 से 1819 ई. तक बड़ौदा की गायकवाड़ राजा द्वारा किया गया।

किद्वर विद्रोह

- किद्वर के स्थानीय शासक की विधवा रानी चेन्नमा ने किया क्योंकि अंग्रेजों ने राजा के दत्तक पुत्र को मान्यता नहीं दी।
- यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक कार्यवाही द्वारा इस विद्रोह को दबा दिया यह विद्रोह 1824 से 1829 ईस्वी तक चला।

कच्छ विद्रोह (1819)

- कच्छ के राजा भारमल को अंग्रेजों द्वारा शासन से बेदखल करना कच्छ विद्रोह का मुख्य कारण था।
- अंग्रेजों ने कच्छ के अल्प वयस्क पुत्र को वहां का शासक बना दिया और भू - कर में वृद्धि कर दी। इसका विरोध स्वरूप भारमल और उसके समर्थकों ने 1819 में यह विद्रोह शुरू कर दिया।

भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह

पॉलीगार विद्रोह 1801

- तमिलनाडु में नई भूमि व्यवस्था लागू करने के बाद ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सन् 1801 ईस्वी में वहां के स्थानीय पॉली वालों ने वीपी कट्टा बामन्नान के नेतृत्व में विद्रोह किया गया और यह विद्रोह 1856 ईस्वी तक चला।

पाइक विद्रोह (1817)

- मध्य उड़ीसा में पाइक जनजाति द्वारा सन् 1817 ईस्वी से 1825 ईस्वी तक यह विद्रोह किया। इस विद्रोह के नेतृत्व कर्ता बख्शीजग बंधु ने किया।

सूरत का नमक विद्रोह (1817)

- अंग्रेजों द्वारा नमक के कर में 50 पैसे की वृद्धि करने पर इसका विरोध करने के लिए 1844 ईस्वी में सूरत के स्थानीय लोगों ने यह विद्रोह किया। इस विद्रोह के परिणाम स्वरूप अंग्रेजों ने बढ़ाए नमक करों को वापस ले लिया।

नागा विद्रोह(1931)

- नागा विद्रोह रोगमड़ जदोनांग के नेतृत्व में भारत के पूर्वी राज्य नागालैंड में हुआ।
- नागा आंदोलन का मुख्य उद्देश्य नागा राज्य की स्थापना करके प्राचीन धर्म को स्थापित करना था इस आंदोलन की बागडोर एक नागा महिला गौडिनल्यू ने अपने हाथों में ले ली।

खंड एवं सवार विद्रोह (1837)

- खंड एवं सवार विद्रोह 1837 ईस्वी से लेकर 1856 ईस्वी तक बंगाल तमिलनाडु तथा मध्य भारत में रहने वाली खोंड तथा सवार नामक जनजातियों द्वारा चलाया गया
- इस विद्रोह का मुख्य कारण अंग्रेजी सरकार द्वारा नरबलि पर रोक तथा नए कर लगाना था।

युआन जुआंग विद्रोह (1867)

- युआन विद्रोह 1867 ई. ने रतन नायक के नेतृत्व में क्योङ्गर में हुआ था
- क्योङ्गर के राजा के राज्य अभिषेक पर युआन सरदारों को उपस्थित होना अनिवार्य था।
- इस प्रथा को अंग्रेज सरकार द्वारा एकदम से समाप्त कर दिया जिससे क्योङ्गर राज्य में यह विद्रोह भड़क गया।

खोण्डा डोरा विद्रोह (1900)

- खोण्डा डोरा विद्रोह विशाखापट्टनम के डाबर क्षेत्र में सन् 1900 में खोण्डा डोरा नामक जनजाति द्वारा प्रारंभ किया गया
- इस विद्रोह के नेतृत्वकर्ता कोरा मलैया थे कोरा मलैया ने स्वयं को पांडवों का अवतार तथा अपने पुत्र को श्री कृष्ण का अवतार बताया।

विजय नगर का विद्रोह (1765)

दीवान बेलाटम्पी का विद्रोह(1805)

खामती विद्रोह(1843)

कोया विद्रोह (1879)

- कोया विद्रोह दो चरणों में हुआ पहले चरण का नेतृत्व टेम्पा सोरा ने किया और द्वितीय चरण में राजन अनंत शैय्यार नेतृत्व किया।
- कोया आंदोलन गोदावरी के पूर्वी क्षेत्र में रम्पा प्रदेश में शुरू हुआ।
- इस कोया विद्रोह का मुख्य कारण आदिवासियों के जंगल संबंधी प्राकृतिक अधिकारों को अंग्रेजों द्वारा खोल लिया गया तथा कोया लोगों पर ताड़ी के घरेलू उत्पादन पर कर लगा देना मुख्य कारण था।
- राजू रम्पा में कोया विद्रोह का कुछ समय तक नेतृत्व किया द्वितीय चरण में कोया विद्रोह का नेतृत्व अनंत शैय्यार ने किया

ताना भगत आंदोलन

- ताना भगत आंदोलन की शुरुआत वर्ष 1914 ई. में बिहार में हुई थी।

- यह आंदोलन लगान की ऊँची दर तथा चौकीदारी कर के विरुद्ध किया गया था।
- इस आंदोलन के प्रवर्तक 'जतरा भगत' थे, जिसे कभी बिरसा मुण्डा, कभी जमी तो कभी केसर बाबा के समतुल्य होने की बात कही गयी है।
- आंदोलन की शुरुआत 'मुण्डा आंदोलन' की समाप्ति के करीब 13 वर्ष बाद 'ताना भगत आंदोलन' शुरू हुआ।

पहाड़िया विद्रोह

- 1770 के विद्रोह के दसक में राजमहल के पहाड़ी क्षेत्रों वर्तमान झारखंड में ब्रिटिश भू- राजस्व व्यवस्था के विरोध में पहाड़िया विद्रोह हुआ।

बस्तर का विद्रोह

- सन् 1910 में बस्तर के राजा के विरुद्ध जगदलपुर क्षेत्र में विद्रोह हुआ।
- जिसका दमन ब्रिटिश सेना ने किया। इस विद्रोह का मुख्य कारण वन अधिनियमों का क्रियान्वयन और सामन्ती करों का करारोपण था।

1857 की महान क्रांति

- 1856 में अंग्रेजों ने पुरानी बन्दुक ब्राउन बेस के स्थान पर नई एनफील्ड रायफल को प्रयोग करने का निर्णय लिया। उसके लिए जो कारतूस बनाये गए उन्हें रायफल में भरने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था।
- इन कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग किया गया था।
- यह चर्बी वाले कारतूस ही 1857 की क्रांति के प्रमुख कारण बना।
- 1857 की क्रांति में भाग लेने वाले सर्वाधिक सैनिक अवध राज्य से थे।
- 1857 की क्रांति के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री पामस्टन थे।
- 29 मार्च 1857 ई. को मंगल पांडे नामक एक सैनिक ने बैरकपुर में गाय की चर्बी मिले हुए कारतूसों को मुंह से काटने से स्पष्ट मना कर दिया था। फलस्वरूप उसे गिरफ्तार कर 8 अप्रैल 1857 को फांसी दे दी गई। मंगल पांडे का सम्बन्ध 34 वी बंगाल नेटिव इन्फैंट्री से था।
- 10 मई 1857 के दिन मेरठ की पैदल टुकड़ी 20 N.I. से 1857 ई. की क्रांति की शुरुआत हुई।
- 1857 ई. में क्रांति के समय भारत का गवर्नर लॉर्ड कैनिंग एवं इंग्लैंड के प्रधानमंत्री पोर्मस्टेन (लिबरल) थे।
- **नोट :** अंग्रेजी भारतीय सेना का निर्माण 1748 ई. में आरंभ हुआ। उस समय मेजर स्ट्रिंजर लॉरेंस को अंग्रेजी भारतीय सेना का जनक पुकारा गया।
- 34वीं रेजीमेंट के सिपाही मंगल पांडे ने बैरकपुर नामक स्थान से विद्रोह किया था।
- रानी लक्ष्मी बाई को अंतिम युद्ध में कैप्टन ह्यूरोज ने पराजित किया था।
- लॉर्ड कैनिंग ने 1857 ई. में इलाहाबाद को आपातकालीन मुख्यालय बनाया था।

- भारतीय उग्र राष्ट्रवाद का जनक, आधुनिक भारत का निर्माता, भारतीय अशांति के जनक तथा देश भक्तों के राजकुमार बाल गंगाधर तिलक को कहा गया है।
- “भारतीय अशांति” नामक पुस्तक के लेखक वैंलेंटाइन शिरोल थे। ये लन्दन टाइम्स के संवादाता थे। इस पुस्तक में इन्होंने बाल गंगाधर तिलक को भारतीय अशांति का जन्मदाता कहा है।
- अनुशीलन समिति की स्थापना क्रांतिकारियों ने की थी।
- साइमन कमीशन के विरोध के समय लाला लाजपत राय पर लाठियों से प्रहार करने वाले सहायक अधीक्षक सांडर्स (लाहौर) की 30 अक्टूबर 1928 ई. को भगत सिंह चन्द्र शेखर आजाद और राजगुरु द्वारा की गई हत्या हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की क्रांतिकारी गति विधि थी।
- सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के मुख्य सदस्य चन्द्रशेखर आजाद 27 फरवरी 1931 ई. को पुलिस के साथ मुठभेड़ में अल्फ्रेड पार्क इलाहाबाद में शहीद हुये।
- 23 मार्च 1931 ई. को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को ब्रिटिश सरकार द्वारा फांसी दी गई।
- बंगाल में सूर्यसेन ने इंडियन रिपब्लिकन आर्मी (आई. आर. ए.) की स्थापना की थी। यह संस्था चटगाँव में सक्रिय थी। इसने 1930 ई. में चटगाँव शस्त्रागार लुट को अंजाम दिया।
- बिपिन चन्द्र पाल ने लोकतन्त्रात्मक स्वराज के विचार का प्रतिपादन किया।

अध्याय - 4

राष्ट्रीय आंदोलन

राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण

ब्रिटिश राजनीतिक आर्थिक सामाजिक नीतियाँ

- ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विभिन्न राज्यों को जीतकर उनकी अलग-अलग पहचान समाप्त कर वहाँ एक समान सामाजिक-राजनीतिक संरचना स्थापित की।
- इसी क्रम में भारत का एक गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया तो साथ ही, एक समान न्यायिक प्रणाली लागू की गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले भारतीय एक सूत्र में बचे।
- वस्तुतः ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया। दरअसल एक साइलेट एकलुट की उपस्थिति एवं पहचान ने विभिन्न क्षेत्र के भारतीयों को ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
- ब्रिटिश शासन द्वारा विकसित संचार प्रणाली जैसे-रेलवे सड़क डाकतार व्यवस्थाने विभिन्न क्षेत्र के लोगों के आवागमन को आसान बनाकर आपसी संपर्क को बढ़ावा दिया।
- फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार निर्मित हुआ। वस्तुतः रेलवे जैसे साधनों के विकास से देश के विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों एवं लोगों का आपसी संपर्क आसान हुआ। इससे राजनीतिक विचारों के आदान प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।
- ब्रिटिश शिक्षा नीति एवं पश्चिमी चिंतन ने भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया। फलतः एक भारतीय मध्यवर्ग का उदय हुआ जो ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप को समझ सका और शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर एकिक्रिया एवं मध्यवर्ग होकर बेंथम मिल, रूसो, जॉन लॉक, मोटेस्क्वी डार्विन के विचारों से परिचित हुआ और जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करने लगा।
- इस तरह आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके उसके औपनिवेशिक स्वरूप को उजागर कर दिया और शोषण से मुक्ति के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना कर उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। इसी संदर्भ में यह कहा गया कि “भारतीयों ने पश्चिमी हथौड़े से पश्चिमी बेड़ियों को तोड़ डाला”।

(2) सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन :-

- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछूत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परंपरा को उद्धृत कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।

- इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन :-

- पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे -स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) लिटन और कर्जन की नीतियाँ :-

- लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया। लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया। साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में उम्र सीमा में कमी कर भारतीयों को इससे बाहर करने की योजना बनायी।
- इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।
- कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया। तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की। इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा।
- वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ। इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गया कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।

(5) रिपन की नीतियाँ :-

- वायसरॉय रिपन के समय 1883 में 'इल्बर्ट बिल' विवाद सामने आया। जिसने भारतीयों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया। वस्तुतः इल्बर्ट बिल के तहत भारतीयों को भी यूरोपियों का मुकदमा सुनने का अधिकार दिया गया।
- किंतु अंग्रेजों ने संगठित होकर इस बिल का विरोध किया जिसे खेत विद्रोह के नाम से जाना जाता है। अतः रिपन को यह बिल वापस लेना पड़ा। इस बिल के विवाद से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति पर चल रहे हैं और संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगों को मनवाया जा सकता है।

कांग्रेस की स्थापना

- कांग्रेस शब्द संयुक्त राज्य अमेरिका से लिया गया है जिसका अर्थ लोगों का समूह है। इसका आरंभिक नाम इंडियन नेशनल यूनियन रखा गया और प्रथम सम्मेलन पुणे में आयोजित करने की घोषणा की गई।
- किंतु वहां प्लेग फैलने के कारण यह सम्मेलन बाम्बे में हुआ वहां प्लेग और दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया।
- कांग्रेस का संस्थापक एक ब्रिटिश सेवानिवृत्त अधिकारी A.O. ह्यूम था। इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे। इसमें 72 लोग सदस्य बने।
- कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुद्दीन तैय्यब थे जो 1887 में मद्रास अधिवेशन में अध्यक्ष बने।

कांग्रेस की स्थापना के संबंध में विवाद :

(i) सेफ्टी वाल्व सिद्धांत सुरक्षा कपाट सिद्धांत

- इस सिद्धांत का प्रतिपादन लाला लाजपत राय ने किया। उन्होंने ह्यूम के जीवनी लेखक विलियम वेडरबर्न को आधार बनाकर अपनी अवधारणा 'यंग इंडिया' लेखों में प्रकाशित किया और कहा कि कांग्रेस लार्ड डफरिन के मस्तिष्क की उपज है।
- वस्तुतः भारतीय असंतोष को पहले ही जान लेने के लिए इस संस्था का गठन किया। दरअसल लाला लाजपत राय ने कांग्रेस की यह आलोचना उसके उदारवादी नेतृत्व पर प्रहार करने के क्रम में की।

(ii) तड़ित चालक सिद्धांत

- गोपाल कृष्ण गोखले ने इस सिद्धांत के तहत कांग्रेस की स्थापना को स्पष्ट करते हुए कहा कि सरकारी असंतोष से बचने के लिए भारतीय नेताओं ने ह्यूम का प्रयोग किया।
- वस्तुतः कांग्रेस का संस्थापक यदि इस समय कोई अंग्रेज नहीं होता, तो आरंभ में ही यह संस्था ब्रिटिश दमन का शिकार हो सकती थी। अतः ब्रिटिश दमन से बचने के लिए भारतीयों ने ह्यूम का नेतृत्व स्वीकार किया जो एक ब्रिटिश अधिकारी थे।

उदारवादी आंदोलन

पृष्ठभूमि :-

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की आरंभिक राजनीति राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादी या नरमपंथी राजनीति के नाम जानी जाती है।
- इसके प्रमुख नेता दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, जे. घोषाल, बदरुद्दीन तैय्यब महादेव गोविन्द रानाडे, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी मदनमोहन मालवीय आदि थे।

विचारधारा:

- उदारवादी कांग्रेसी नेता ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास करते थे। अर्थात् ब्रिटिश संसद एवं जनता में इनका अटूट विश्वास था। अतः यह संवैधानिक मार्गों पर चलकर अधिकार प्राप्त करने पर बल देते थे।
- उदारवादियों का मानना था कि भारतीय जनता अशिक्षित है। अतः इसे आंदोलन शामिल नहीं करना चाहिए। इस तरह, भारत की आम जनता में इनका विश्वास नहीं था।
- **उदारवादियों का मानना था कि ब्रिटिश शासन भारत में एक वरदान है और यह भारत को धीरे-धीरे लोकतांत्रिक शासन की ओर ले जाएगा।** इसलिए उन्होंने कभी ब्रिटिश साम्राज्य से अलग होने की बात नहीं की। बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत स्वशासन की प्राप्ति पर बल दिया।
- उदारवादियों का मानना था कि इंग्लैंड में मौजूद ब्रिटिश रूल बेहद प्रगतिशील है। वहाँ संसदीय शासन प्रणाली है जहाँ जनता के अधिकार सुरक्षित हैं नागरिकों को अपनी मांग रखने का अधिकार है, प्रेस की स्वतंत्रता है, आर्थिक प्रशासनिक स्तर पर नागरिकों के साथ कोई भेदभाव नहीं है, वैज्ञानिक तकनीकी शिक्षा मौजूद है।
- अतः इंग्लैंड का आर्थिक औद्योगिक विकास हो रहा है। इससे वहाँ के लोगों के जीवन में समृद्धि आ रही है। इस तरह इंग्लैंड में स्थापित ब्रिटिश रूल प्रगतिशील है, और यह लोक-कल्याण स्वरूप से युक्त है। जबकि भारत में भी ब्रिटिश नियंत्रण है।
- यहाँ ब्रिटिश अधिकारियों के होते हुए भी ब्रिटिश रूल की स्थापना नहीं की गयी है, यहाँ लोकतांत्रिक शासन नहीं है, प्रतिनिधि संस्थानों में भारतीयों ककी पर्याप्त भागीदारी नहीं है। भारतीयों को नागरिक अधिकारों से वंचित रखा गया है। प्रेस पर सरकारी नियंत्रण है।
- प्रशासनिक सेवाओं में भारतीय नागरिकों के साथ भेदभाव किया जाता है। वैज्ञानिक - तकनीकी शिक्षा का प्रसार नहीं है। ब्रिटिश नीतियों की वजह से भारत में कृषि का पिछड़ापन है।
- हस्तशिल्प उद्योगों का पतन हो गया है। अतः गरीबी, ऋणग्रस्तता और अकाल की बारंबारता मौजूद है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था एक ऋणग्रस्त एवं पिछड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जानी जाती है। वस्तुतः इन सबका कारण भारत में अंग्रेजों द्वारा स्थापित अनब्रिटिश रूल है।

कार्यपद्धति :

- उदारवादी नेता ब्रिटिश जनमत को प्रभावित कर क्रमिक सुधारों पर बल देते थे। अतः उन्होंने लंदन में प्रचार कार्य पर बल दिया।
- उदारवादी नेता प्राथना पत्र, स्मरण -पत्र तथा विभिन्न लेखों के माध्यम से अपनी समस्याओं को प्रस्तुत कर समाधान की मांग करते थे। वस्तुतः उदारवादी संवैधानिक तरीके से अपनी मांग रखकर रक्तहीन संघर्ष में विश्वास करते थे।

मांगे

- भारतीय विधायिका में भारतीयों की संख्या बढ़ाई जाए।
- कनाडा और ऑस्ट्रेलिया के समान ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन भारत को स्वशासन दिया जाए।
- भेद-भाव मूलक शस्त्र अधिनियम की समाप्ति हो तथा सैन्य व्यय में कटौती की जाए एवं धन की निकासी रोका जाए।
- सिविल सेवा का भारतीयकरण किया जाए और इस परीक्षा के लिए उच्च तीमा में वृद्धि की जाए तथा परीक्षा भारत में आयोजित की जाए।
- स्थायी बंदोबस्त अन्य क्षेत्रों में लागू किया जाए।

उग्रवादी आंदोलन

- पृष्ठभूमि
- उदय के कारण
- विचार धारा एवं कार्य पद्धति
- मूल्यांकन

पृष्ठभूमि :-

- कांग्रेस की स्थापना के 20 वर्षों बाद भी जब कोई विशेष राजनीतिक उपलब्धि भारतीयों को प्राप्त नहीं हुई तो उनमें निराशा फैली।
- इसी क्रम में, उग्रवादी चेतना का विकास हुआ जिसके प्रमुख नेता बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल, अरविंद घोष आदि थे।
- लाला लाजपतराय ने 'पंजाबी', बालगंगाधर तिलक ने 'केसरी' तथा विपिनचन्द्रपाल ने 'न्यू इंडिया' नामक पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार पर करारा प्रहार किया था।

उदय के कारण :-

- ब्रिटिश शासन के वास्तविक स्वरूप की पहचान ने राष्ट्रीय चेतना को उग्र बनाया। वस्तुतः आरंभिक राष्ट्रवादियों द्वारा ब्रिटिश शासन की आर्थिक समीक्षा प्रस्तुत किए जाने से उसका औपनिवेशिक चेहरा उजागर हो गया। अतः अब उससे न्याय की उम्मीद नहीं की जा सकती। इसलिए स्वयं के अधिकारों की प्राप्ति पर बल क्रम में उग्रवादी विचारधारा का उदय हुआ।
- ब्रिटिश सरकार ने तिलक पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया। फलतः भारतीय जनता में असंतोष फैला। अतः ब्रिटिश विरोधी भावनाएँ उग्र हुईं।
- सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन ने भी उग्रवादी चेतना के विकास को प्रोत्साहित किया। विवेकानन्द ने कहा कि लम्बी से लम्बी रात्रि अब समाप्त होती दिख रही है।
- हमारी मातृभूति गहरी नींद से जाग रही है। इसी तरह अरविंद घोष ने कहा कि स्वतंत्रता हमारे जीवन की सांस है इसी तरह, आर्य समाज ने स्वदेशी, स्वराज, भारत भारतीयों के लिए जैसे विचारों को देकर राष्ट्रीय चेतना को उग्र बनाया।
- अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों ने भी राजनीतिक विचारधारा को उग्र बनाया। वस्तुतः 1896 में इथोपिया ने इटली को तथा 1905 में जापान ने रूस को पराजित किया। इससे यूरोप की अपराजेयता की बात झूठी साबित हुई। अतः भारतीयों में



अध्याय - 12

भारतीय संसद

संघीय विधानमंडल (संसद)

- भारतीय संविधान के अनु. 79 के अनुसार संसद के तीन अंग होते हैं - राष्ट्रपति, राज्यसभा और लोकसभा
- भारतीय संसद की संप्रभुता न्यायिक समीक्षा से प्रतिबंधित है।
- संसद में स्थगन प्रस्ताव (adjournment motion) लाने का उद्देश्य सार्वजनिक महत्व के अति आवश्यक मुद्दों पर बहस करना है।

संसद से सम्बंधित अनुच्छेद

अनु.	सम्बंधित विषय - वस्तु
79	संसद का गठन
80	राज्य सभा की संरचना
81	लोक सभा की संरचना
82	प्रत्येक जनगणना के पश्चात पुनः समायोजन
83	संसद के सदनों की अवधि
84	संसद की सदस्यता के लिए अर्हता
85	संसद के सत्र सत्रावसान एवं विघटन
86	राष्ट्रपति का सदनों को सम्बंधित तथा उनको संदेश देने का अधिकार
87	राष्ट्रपति का विशेष सम्बोधन अभिभाषण
88	सदनों के सम्बंध में मंत्रियों और महान्यायाधीश के अधिकार
89	राज्य सभा का सभापति तथा उपसभापति
90	राज्य सभा के उपसभापति के पद की रिक्ति, त्याग तथा पद से हटाया जाना।
91	सभापति के कर्तव्यों के निर्वहन अथवा सभापति के रूप में कार्य करने की उपसभापति अथवा अन्य व्यक्ति की शक्ति
92	जब राज्य सभा के सभापति अथवा उपसभापति को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना
93	लोक सभा का अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष
94	लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष पद की रिक्ति, त्यागपत्र तथा पद से हटाया जाना
95	लोक सभा उपाध्यक्ष अथवा किसी अन्य व्यक्ति का लोक सभा अध्यक्ष के कर्तव्यों के निर्वहन की शक्ति
96	जब लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना।
97	सभापति व उपसभापति तथा अध्यक्ष व उपाध्यक्ष के वेतन-भत्ते
98	संसद का सचिवालय
99	सदस्यों द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान

100	दोनों सदनों में मतदान, रिक्तियों के होते हुए भी सदनों की कार्य करने की शक्ति तथा गणपूर्ति
101	स्थानों का रिक्त होना
102	संसद की सदस्यता के लिए निरर्हताएं
103	सदस्यों की अयोग्यता से सम्बंधित प्रश्नों पर निर्णय
104	अनु. 99 के अंतर्गत शपथ लेने या प्रतिज्ञान करने से पहले अर्हत न होते अथवा निरर्हत किए जाने पर भी सदन में बैठने तथा मतदान करने पर दंड।

लोकसभा (art-81)

- लोकसभा को निम्न सदन / प्रथम सदन / अस्थाई सदन / लोकप्रिय सदन कहते हैं।
- प्रथम लोकसभा का गठन 17 अप्रैल, 1952 को हुआ था।
- अनुच्छेद 81 तथा 331 लोकसभा के गठन से संबंधित हैं।
- लोकसभा में अधिकतम 552 सदस्य हो सकते हैं। इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि केंद्र शासित प्रदेशों से 20 सदस्य चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।
- लोकसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 545 से इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि 13 सदस्य केंद्र शासित प्रदेशों से चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।
- 91वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2001 में प्रावधान किया गया है कि लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 552 सन् 2026 तक बनी रहेगी।
- लोकसभा का कार्यकाल अपनी प्रथम बैठक से अगले 5 वर्ष तक होती है।
- लोकसभा का सदस्य बनने के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएं होनी आवश्यक हैं
 - वह भारत का नागरिक हो।
 - उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो।
 - वह संघ सरकार तथा राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न हो (सरकारी नौकरी में न हो)
 - वह पागल / दिवालिया न हो।
- लोकसभा - अध्यक्ष का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है, किन्तु अपने पद से वह स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकता है अथवा अविश्वास प्रस्ताव द्वारा उसे हटाया जा सकता है।
- 61वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1989 के द्वारा यह व्यवस्था कर दी गई कि 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाला नागरिक लोकसभा या राज्य विधानसभा के सदस्यों को चुनने के लिए वयस्क माना जाएगा।
- लोकसभा विघटन की स्थिति में 6 मास से अधिक नहीं रह सकती।
- लोकसभा का गठन अपने प्रथम अधिवेशन की तिथि से पाँच वर्ष के लिए होता है।

- लेकिन प्रधानमंत्री की सलाह पर लोकसभा का विघटन राष्ट्रपति द्वारा 5 वर्ष के पहले भी किया जा सकता है।
- क्योंकि लोकसभा के दो बैठकों के बीच का समयान्तराल 6 मास से अधिक नहीं होना चाहिए।
- लोकसभा की अवधि एक बार में 1 वर्ष से अधिक नहीं बढ़ाई जा सकती है।
- आपात उद्घोषणा की समाप्ति के बाद 6 माह के अन्दर लोकसभा का सामान्य चुनाव कराकर उसका गठन आवश्यक है।
- लोकसभा का अधिवेशन 1 वर्ष में कम से कम 2 बार होना चाहिए
- अनुच्छेद 85 के तहत राष्ट्रपति को समय-समय पर संसद के प्रत्येक सदन, राज्यसभा एवं लोकसभा को आहूत करने, उनका सत्रावसान करने तथा लोकसभा का विघटन करने का अधिकार प्राप्त है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा का प्रमुख पदाधिकारी होता है और लोकसभा की सभी कार्यवाहियों का संचालन करता है -
- लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के सदस्यों के द्वारा किया जाता है।
- लोकसभा अध्यक्ष के निर्वाचन की तिथि राष्ट्रपति निश्चित करता है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा के सामान्य सदस्य के रूप में शपथ लेता है।
- लोकसभा अध्यक्ष को कार्यकारी अध्यक्ष शपथ ग्रहण कराता है।
- आगामी लोकसभा चुनाव के गठन के बाद उसके प्रथम अधिवेशन की प्रथम बैठक तक अपने पद पर बना रहता है। लोकसभाध्यक्ष उपाध्यक्ष को अपना त्यागपत्र दे देता है।

राज्यों में लोकसभा सदस्यों की संख्या

1. उत्तर प्रदेश	80
2. महाराष्ट्र	48
3. पश्चिम बंगाल	42
4. बिहार	40
5. तमिलनाडु	39
6. मध्य प्रदेश	29
7. कर्नाटक	28
8. गुजरात	26
9. राजस्थान	25
10. आंध्र प्रदेश	25
11. ओडिशा	21
12. केरल	20
13. तेलंगाना	17
14. असम	14
15. झारखण्ड	14
16. पंजाब	13
17. छत्तीसगढ़	11

18. हरियाणा	10
19. जम्मू / कश्मीर	6
20. उत्तराखण्ड	5
21. हिमाचल प्रदेश	4
22. आंध्रप्रदेश	2
23. गोवा	2
24. मणिपुर	2
25. मेघालय	2
26. त्रिपुरा	2
27. मिजोरम	1
28. नागालैंड	1
29. सिक्किम	1

केन्द्रशासित प्रदेश लोकसभा सदस्यों की संख्या

1. दिल्ली	7
2. अंडमान निकोबार	1
3. चण्डीगढ़	1
4. दादरा / नागर हवेली	1
5. दमन एवं दीव	1
6. लक्षद्वीप	1
7. पुदुचेरी	1

राज्यसभा (art-80)

- राज्यसभा को उच्च सदन /द्वितीय सदन /स्थायी सदन / संघीय सदन भी कहा जाता है।
- राज्यसभा राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है।
- यह एक स्थाई सदन है और कभी भंग नहीं होता
- किन्तु इसके 1/3 सदस्य प्रति दो वर्ष के बाद स्थान खाली कर देते हैं, जिनकी पूर्ति नए सदस्यों से होती है।
- भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है।
- राज्यसभा में अधिक-से-अधिक 250 सदस्य हो सकते हैं। इनमें 238 राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों से निर्वाचित और 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत होते हैं। ये 12 सदस्य ऐसे होते हैं जिन्हें साहित्य, विज्ञान, कला सामाजिक सेवा इत्यादि का विशेष ज्ञान होता है।
- राज्यसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 245 में , राज्यों से 233 तथा राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत 12 सदस्य होते हैं।

राज्यों के प्रतिनिधि - सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रीति से होता है। राज्यों के प्रतिनिधि अपने राज्यों की विधानसभाओं के सदस्यों द्वारा निर्वाचित होते हैं। यह निर्वाचन आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति से तथा एकल संक्रमणीय मत विधि के अनुसार होता है।

- भारत में राज्यसभा के गठन के विषय में एक ओर दक्षिण अफ्रीका की अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली और दूसरी ओर आयरलैंड की मनोनयन प्रणाली को अपनाया गया है। राज्यसभा में प्रतिनिधियों की संख्या उस राज्य की जनसंख्या के आधार पर निश्चित की गई है।



- **कटौती प्रस्ताव (cut motion)** को समापन प्रस्ताव (closure motion) के नाम से भी जाना जाता है।
- विशेषाधिकार हनन का प्रस्ताव दोनों सदनों में लाया जा सकता है।
- संसद में दो प्रकार की समितियाँ अस्तित्व में होती हैं।
 1. तदर्थ समिति
 2. स्थायी समिति
- स्थायी समितियाँ वर्ष भर अस्तित्व में रहती हैं। जिनमें दो समितियाँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।
- लोक लेखा समिति
- अनुमान समिति

लोक लेखा समिति इसमें कुल 22 सदस्य होते हैं जिसमें 15 लोकसभा से, 7 राज्यसभा से लिए जाते हैं।

- इसका कार्यकाल 1 वर्ष का होता है (30 अप्रैल से 31 मई)
- इस समिति का मुख्य कार्य C.A.G. 'रिपोर्ट' के आधार पर सार्वजनिक लेखकों की जाँच करना होता है। समिति का कोरम 1/3 सदस्यों से पूरा होता है।
- (अनुमान समिति | आकलन / प्राकलन समिति)
- यह लोकसभा की समिति है।
- इसमें कुल 30 सदस्य होते हैं।
- इस समिति का कार्य बचते के उपाय सुझाना है।
- इसका अध्यक्ष सत्तादल का वरिष्ठ नेता होता है।
- समिति का कार्यकाल 1 मई से 30 अप्रैल (1 साल) का होता है।
- कोरम 1/3 सदस्यों से पूरा होता है।
- इसे अधिकारियों की मित्र- समिति भी कहते हैं।

सार्वजनिक उपक्रम समिति

- "इसमें सदस्यों की कुल संख्या 15 होती है। 10 लोकसभा व 5 राज्यसभा से।
- यह समिति व सार्वजनिक उपक्रमों के प्रबंधन में सुधार के सुझाव देती है।

कार्य मन्त्रणा समिति

- संसद के दोनों सदनों की अपनी - अपनी कार्य-मन्त्रणा समितियाँ होती हैं। जिनका अध्यक्ष स्पीकर / चेयरमैन होता है।
- इस समिति में 10- सदस्य होते हैं, प्रमुख दलों के संसदीय दल के नेता होते हैं, इस समिति का मुख्य दायित्व सदन की कार्य-सूची का निर्धारण करना होता है।

Lame Duck - यह अमेरिकी (U.S.A) अवधारणा है, इस अवधारणा के तहत संसद की बैठक में कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लिया जा सकता है। अमेरिका में कार्यकाल समाप्त होने के पहले ही संसदीय चुनाव करा लिया जाता है। जबकि जिन सदस्यों का कार्यकाल शेष है, उनकी आखरी बैठक इसके बाद होती है। इस बैठक में कामचलाऊ मुद्दों पर भी चर्चा की जाती है। यही Lame Duck Session है।

- बजट - वार्षिक वित्तीय विवरण, अनुच्छेद-112 से सम्बन्धित है।

- संचित निधि केन्द्र एवं राज्य दोनों सरकारों द्वारा गठित की जाती है।
- सरकार को प्राप्त समस्त आय (राजस्व, उधार) इस निधि का हिस्सा होती है।
- संसद (विधायिका) के अनुमति के बगैर इस निधि से धन व्यय नहीं किया जा सकता।
- आकस्मिक निधि का गठन (अनुच्छेद -267) के तहत किया जाता है।
- इस निधि का प्रयोग आपदा राहत के लिए किया जाता है।
- यह निधि राष्ट्रपति/राज्यपाल के नाम से रखी जाती है।
- व्यय के बाद विधायिका की अनुमति प्राप्त कर ली जाती है।
- अनुदान मांगों पर बहस व मतदान के लिए 26 दिन का समय निर्धारित किया जाता है।
- विपक्ष अनुदान मांगों के विरुद्ध कटौती- प्रस्ताव ला सकता है।

यह कटौती प्रस्ताव तीन प्रकार के होते हैं।

- (1) सांकेतिक कटौती प्रस्ताव
- (2) नीतिगत कटौती प्रस्ताव
- (3) मितव्ययिता कटौती प्रस्ताव

- (1) सांकेतिक कटौती प्रस्ताव - इसके तहत किसी अनुदान-मांग से 100 रु. घटाने का प्रस्ताव रखा जाता है।
 - (2) नीतिगत कटौती प्रस्ताव - इसके तहत किसी अनुदान मांग को घटाकर 1 रु. करने का प्रस्ताव रखा जाता है।
 - (3) मितव्ययिता कटौती प्रस्ताव - इसके तहत किसी अनुदान मांग से निश्चित धनराशि घटाने का प्रस्ताव रखा रखा जाता है।
- “कटौती प्रस्ताव के पारित होने पर सरकार को त्यागपत्र देना पड़ता है।”

धन-विधेयक (अनुच्छेद- 110)

- धन विधेयक में 6 बिन्दु होते हैं - कर की दर बढ़ाया, घटाना, संचित निधि से धन निकालना या जमा करना, संचित निधि का लेखा एवं लेखा परीक्षण।
- यदि किसी विधेयक में उपरोक्त 6 बातों के अतिरिक्त कुछ और भी होता है, तो उसे वित्त विधेयक कहा जाता है वित्त विधेयक पर राज्य सभा का समान अधिकार होता है।
- धन विधेयक पर लोकसभा का विशेषाधिकार होता है,
- राज्यसभा इसे अधिकतम 14 दिन तक ही रोक सकती है।
- विनियोग विधेयक पारित होने के बाद ही सरकार संचित निधि से धन निकाल सकती है।
- अनुपूर्क माँगें - यह माँगें वित्तीय वर्ष समाप्त होने के पूर्व संसद में रखी जाती हैं।
- अतिरिक्त माँगें - यह माँगें वित्तीय वर्ष समाप्त होने के बाद संसद में रखी जाती हैं।
- अपवाद माँगें - यह माँगें विशेष प्रयोजन के लिए संसद में रखी जाती हैं।

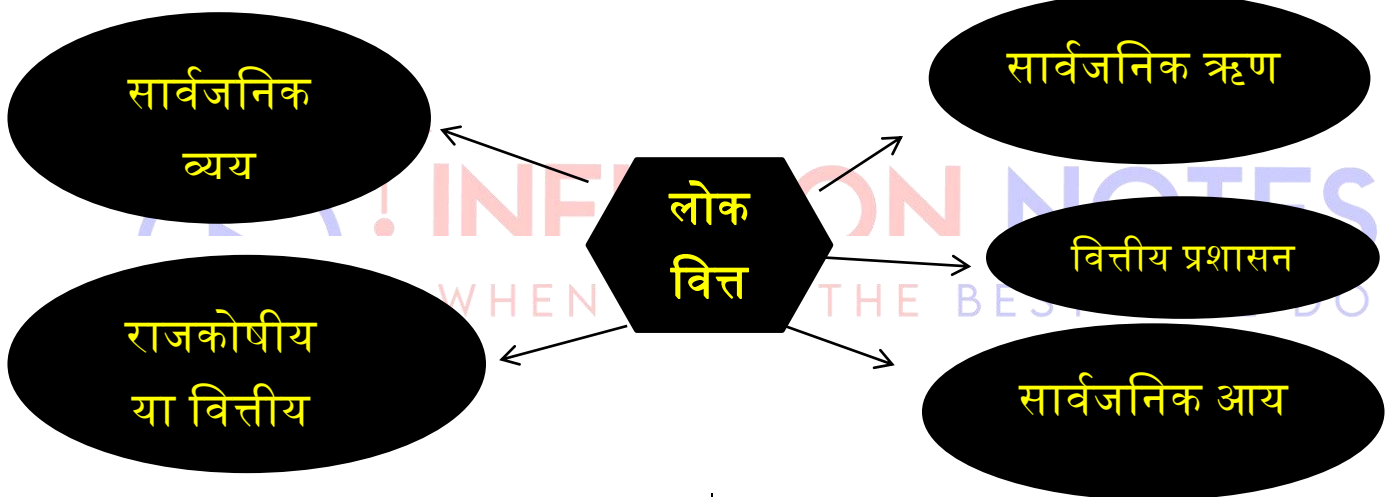
अध्याय - 3

सार्वजनिक वित्त (लोक वित्त)

- अर्थव्यवस्था में सरकार की भूमिका का अध्ययन लोक वित्त (Public finance) कहलाता है। यह अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो सरकार के आय (revenue) तथा व्यय का आकलन करती है।
- लोक वित्त सरकार में राजस्व जुटाने व खर्च करने का विज्ञान है।
- डॉ. डाल्टन के अनुसार- "लोक वित्त उन विषयों में से एक है जो अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र की सीमा रेखा पर स्थित है।" इसका संबंध लोक सत्ताओं के आय - व्यय तथा उनके पारस्परिक समायोजन और समन्वय से है।
- प्रो. सी. एल. बैस्टेल के अनुसार - "लोक वित्त राज्य की लोक सत्ताओं के आय - व्यय, उनके पारस्परिक संबंध, वित्तीय प्रशासन एवं नियंत्रण का अध्ययन करता समग्रता से लोक वित्त मूल रूप से सरकारों के आय - व्यय से

संबंधित है तथा सरकारों का अर्थ केंद्र सरकार राज्य सरकारों तथा स्थानीय सरकारों से है।"

- वर्तमान में लोक वित्त का क्षेत्र अधिक व्यापक हो गया है इसके अंतर्गत सरकार के आय - व्यय के अतिरिक्त वित्तीय प्रशासन, लेखा निरीक्षण, सार्वजनिक ऋण प्रबंधन एवं वित्तीय नियंत्रण आदि कार्यों को भी सम्मिलित किया जाता है।
- लोक वित्त के विभिन्न पहलुओं की विवेचना इतिहास में भी मिलती है। एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'Wealth of Nation' (1776) के खंड 5 में लोक वित्त के विभिन्न अंगों का विश्लेषण किया है। इस खंड में तीन अध्याय हैं जो क्रमशः सरकार के व्यय सरकार के राजस्व तथा लोक ऋण का विवेचन करते हैं।
- लोक वित्त अर्थशास्त्र का वह भाग है जो किसी देश की वित्त व्यवस्था तथा उससे संबंधित प्रशासनिक एवं अन्य समस्याओं का अध्ययन करता है और अंततः इसका उद्देश्य स्थिरता के साथ आर्थिक विकास की गति को बनाए रखना होता है। लोक वित्त के अध्ययन को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है।



- लोक वित्त का महत्व (उद्देश्य) -
 - अर्थव्यवस्था में संसाधनों (प्राकृतिक व मानवीय) का वितरण।
 - लोगों में आय व सम्पत्ति का पुनर्वितरण।
 - आर्थिक स्थिरता प्रदान करना।
 - आर्थिक विकास हेतु सरकार को आवश्यक खाद्यान्न यथा (पूँजी, उत्पादन) जुटाने में सहायता प्रदान करना।
- लोक वित्त का महत्व (उद्देश्य) -
 - अर्थव्यवस्था में संसाधनों (प्राकृतिक व मानवीय) का वितरण।
 - लोगों में आय व सम्पत्ति का पुनर्वितरण।
 - आर्थिक स्थिरता प्रदान करना।
 - आर्थिक विकास हेतु सरकार को आवश्यक खाद्यान्न यथा (पूँजी, उत्पादन) जुटाने में सहायता प्रदान करना।

- अधि तथा न्यून माँग को ठीक करना
 - अधि तथा न्यून माँग को ठीक करने के लिए निम्न उपाय शामिल होते हैं-
 - (i) राजकोषीय उपाय और
 - (ii) मौद्रिक उपाय।
 - राजकोषीय उपायों का सम्बन्ध सरकार की राजकोषीय नीति और मौद्रिक उपायों का संबंध सरकार की मौद्रिक नीति से होता है। **राजकोषीय**
- नीति (Fiscal Policy)
 - इससे अधिप्राय अधि तथा न्यून माँग को ठीक करने के लिए सरकार की आय और व्यय नीति (या बजट नीति) से होता है।
 - राजकोषीय नीति के घटक एवं इनके प्रयोग करने की विधि

(A) सरकारी व्यय (Government Expenditure)

एक देश की सरकार विभिन्न प्रकार के व्यय करती है, ये मुख्यतः निम्नलिखित प्रकार के हैं रही हैं। ये मुख्यतः

1. सार्वजनिक निर्माण जैसे - सड़कें, बाघ, पुल आदि पर किया जाने वाला व्यय।
 2. सार्वजनिक कल्याण के कार्यों जैसे- शिक्षा, जन - स्वास्थ्य आदि पर किया जाने वाला व्यय।
 3. देश की सुरक्षा तथा कानून व्यवस्था आदि पर किया जाने वाला व्यय।
 4. उत्पादकों को उत्पादन बढ़ाने के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता (Subsidies)।
- इन सरकारी खर्च में से किसी एक में या सभी में परिवर्तन करके सरकार अधि माँग या न्यून माँग को ठीक करने का उपाय करती है।
- जब अधि माँग होती है तब सरकारी व्यय कम कर दिया जाता है और जब न्यून माँग होती है, सरकारी व्यय बढ़ा दिया जाता है।

(B) कर (Taxes) -

- कर एक आवश्यक भुगतान है जो पारिवारिक तथा उत्पादक क्षेत्रों द्वारा सरकार को दिया जाता है।
- परिवारों तथा उत्पादकों पर कर - भार को बढ़ाकर सरकार अर्थव्यवस्था में क्रय - शक्ति को कम करती है। इसके विपरीत, कर- भार को कम करके, सरकार क्रय - शक्ति को बढ़ाती है। अतः जब न्यून माँग का सामना को ठीक करना होता है तब परिवारों तथा उत्पादकों पर कर - भार बढ़ा दिया जाता है।

(C.) सार्वजनिक उधार / सार्वजनिक ऋण (Public Borrowing / Public Debt)

- जनता से उधार लेकर सरकार सार्वजनिक ऋण का निर्माण करती है। न्यून माँग की स्थिति में सरकार जनता से ऋण लेना कम कर देती है, ताकि लोगों के पास अधिक तरलता (या नकद शेष) बच जाए और समग्र व्यय ऊँचा बना रहे। इसके विपरीत जब अधि माँग की स्थिति होती है तब ब्याज की आकर्षक दर प्रदान करके सरकार सार्वजनिक ऋण को बढ़ा देती है।

(D) घाटों की वित्त व्यवस्था (Deficit Financing) -

- भारत में, घाटे की वित्त व्यवस्था से अभिप्राय सरकार द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) से उधार लेने से है। भारतीय रिजर्व बैंक, अधिक मुद्रा या करेंसी जारी करके मुद्रा उधार देता है। अतिरिक्त मुद्रा / करेंसी जारी के कारण अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त क्रय शक्ति आती है। यह समग्र माँग को बढ़ाता है, जैसा न्यून माँग को ठीक करने के लिए चाहिए होता है। परन्तु अधि माँग की स्थिति में घाटे की वित्त व्यवस्था से, जहाँ तक सम्भव हो, बचने का प्रयास किया जाता है।

भारत में राजकोषीय उत्तरदायित्व

- राजकोषीय उत्तरदायित्व से आशय वित्तीय घाटे (Fiscal Deficit) को सन्तुलित करने की प्रक्रिया से है।
- भारत में राजकोषीय सन्तुलन स्वेच्छा से नहीं अपनाया गया। इसी कारण भारत में राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंध के लिए कानूनी व्यवस्था की गई।

वित्तीय घाटा-

- जब सरकार का व्यय उसकी आय प्राप्ति से अधिक हो जाता है, तो सरकार इस घाटे को पूरा करने के लिए जिस व्यवस्था का सहारा लेती है, उसे घाटे की वित्त व्यवस्था कहते हैं।
- भारतीय दृष्टिकोण में घाटे की वित्त व्यवस्था में निम्नांकित तीन उपाय सम्मिलित किए जाते हैं-
(i) केन्द्रीय बैंक से उधार लेकर अर्थात् नई मुद्रा का सृजन करवाकर।
(ii) संचित नगद बकाया को खेतों से निकाल कर।
(iii) सरकार द्वारा नई मुद्रा एवं सिक्के जारी करके।

वित्त घाटों के आकलन :- वित्त घाटों के आकलन के अन्तर्गत निम्नलिखित घाटों की व्याख्या होती है

पूँजीगत घाटा

- सरकार की पूँजीगत प्राप्तियों एवं पूँजीगत व्यय के अन्तर को पूँजीगत घाटा (Capital Deficit) कहते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि सरकार का पूँजीगत व्यय पूँजीगत प्राप्तियों से अधिक है एवं इसकी पूर्ति राजस्व खाते के अधिशेष के जरिए हो रही किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेत है।

चालू खाता एवं राजकोषीय घाटा

- अर्थव्यवस्था द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं के दृश्य तथा अदृश्य अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारों को प्रदर्शित करने वाले खाते को चालू खाता कहते हैं। इसके शेष को चालू खाता घाटा (Current Account Deficit) कहते हैं। राजकोषीय घाटा तथा चालू खाता घाटा अर्थव्यवस्था को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं।
- राजकोषीय नीति का आरम्भ वर्ष 1936 से माना जाता है। अब लॉर्ड कीन्स ने सार्वजनिक व्यय की भूमिका पर बल दिया था।
- बजटरी घाटा शून्य हो तो मौद्रिक घाटा इस बात पर निर्भर करेगा कि सार्वजनिक ऋण में RBI की धारिता कितनी है।
- कोई भी देश बिना अशोधन (दिवालिया) हुए, जितने व्यय की संभाव्य क्षमता रखता है तथा वास्तव में जितना व्यय करता है, दोनों का अन्तर फिस्कल स्पेस कहलाता है।

राजकोषीय उत्तरदायित्व बिल प्रबंधन एक्ट-2003 (FRBM Act-2003)

- राजकोषीय समेकन (सुदृढीकरण) तथा सार्वजनिक व्यय प्रबंधन की दिशा में राजकोषीय उत्तरदायित्व बिल प्रबंधन एक्ट-2003 एक अत्यन्त ही प्रभावी कदम है।

भारत में गरीबी मापन की विधियाँ

(1.) Uniform Reference Period-

- इसमें किसी परिवार द्वारा पिछले 30 दिनों में उपभोग पर किए गए व्यय के आधार पर गणना की जाती है।
- पहले गरीबी मापन में URP का उपयोग लिया गया था।

(2.) Mixed Reference Period -

- इसमें गणना के 2 आधार होते हैं
- (A) अंतिम 365 days (1 year) - कपड़े, जूते, चप्पल, शिक्षा, स्वास्थ्य, टिकाउ वस्तु पर परिवार द्वारा किया गया खर्च।
- (B) अंतिम 30 दिन (1 माह) - परिवार द्वारा किया गया उपभोग व्यय

NOTE- 2011-12 में सुरेश तेंदुलकर समिति की सिफारिशों के आधार पर गणना में MRP को ही अपनाया गया

(3.) Modified Mixed Reference Period

- 365 दिन = शिक्षा, स्वास्थ्य, कपड़े, जूते, वस्तु
- 30 दिन = ईंधन, विद्युत, मकान किराया, शेष खाद्य वस्तु
- 7 दिन = खाद्य तेल, अंडे सब्जियाँ, जल, मसाले, तंबाकू

NOTE- सी. रंगराजन समिति ने MMRP को अपनाया था।

बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2020 (MPI)

- आरंभ- 2010 से
- संस्थाएं - संयुक्त सहयोगी संस्था राष्ट्र विकास कार्यक्रम ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी
- आधार - स्वास्थ्य, शिक्षा व जीवन स्तर (3 आधार)
- मानक - 10
- इसके आधार पर भारत का स्थान 62वाँ (out of 107)
- भारत - MPI = 0.123
- भारत में गरीबी - 27.91 %

राष्ट्रीय बहु - आयामी गरीबी सूचकांक 2021 (NMPI)

- जारी कर्ता- नीति आयोग
- इसके आधार पर भारत का स्थान 66वाँ (out of 109)
- भारत में गरीबी - 25%
- आधार- Nation Family Health Survey -4 (वर्ष 2015-16)
- सर्वाधिक गरीबी - बिहार
- न्यूनतम गरीबी - केरल

NOTE- राजस्थान का स्थान 8वाँ

- राजस्थान - NMPI 0.14
- राजस्थान में गरीबी 29.46 %
- सर्वाधिक गरीबी (1.) बाडमेर (56.13%) (2.) जैसलमेर
- न्यूनतम गरीबी (1.) झुंझुनू (12.80%) (2.) कोटा

शैक्षणिक मनोविज्ञान

अध्याय - 1

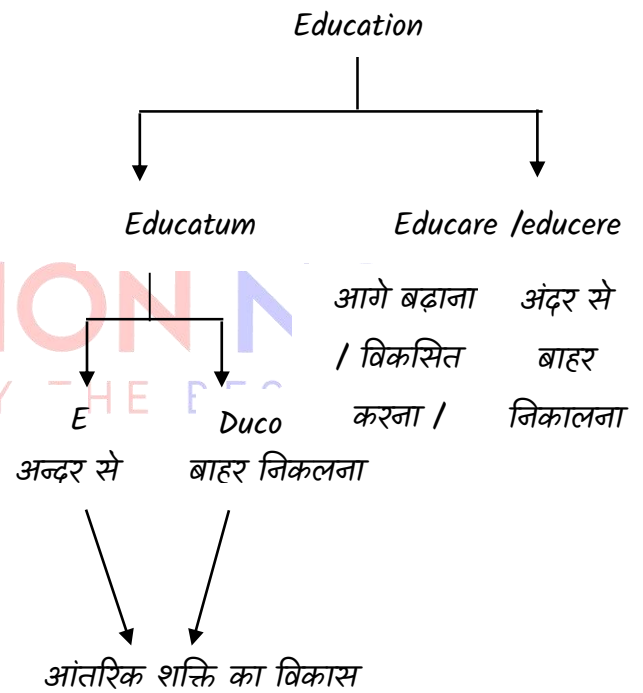
शिक्षा मनोविज्ञान का परिचय

शिक्षा मनोविज्ञान :-

दोस्तों, शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है शिक्षा + मनोविज्ञान।

सर्वप्रथम शिक्षा क्या है :- शिक्षा शब्द की उत्पत्ति शिक्ष धातु से (संस्कृत भाषा) हुई है जिसका अर्थ होता है, सीखना। शिक्षा अंग्रेजी भाषा के शब्द Education का हिन्दी रूपान्तरण है। जो लैटिन भाषा के Educatum शब्द से बना है जिसका अर्थ अंतः निहित शक्तियों का विकास करना शिक्षा संस्कृत के "शिक्ष" धातु से बना है जिसका अर्थ है सिखना।

शिक्षा का वास्तविक अर्थ - प्रकाशित करने वाली क्रिया।



- एज्युकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एडुकेटम से हुई है।
- एडुकेटम का अर्थ - अंदर से बाहर निकालना।
- शिक्षा का संकीर्ण अर्थ :- वह शिक्षा जो निश्चित समय व स्थान से संबंधित होती है।
- शिक्षा का व्यापक अर्थ :- वह शिक्षा जो समय व स्थान से संबंधित नहीं होती है, अपितु आजीवन चलती रहती है।

शिक्षा के तीन आयाम -

शिक्षक छात्र पाठ्यक्रम

जॉन डी. वी. के अनुसार :- त्रिधुवीय -

1. शिक्षक
2. छात्र
3. पाठ्यक्रम

जॉन एडम्स के अनुसार :-

द्वि ध्रुवीय - शिक्षक ----- छात्र
3 R = लिखना, पढ़ना, गणना करना। (Reading, Writing, Arithmetic)
4 H = मानसिक विकास - Head
भावात्मक विकास - Heart
क्रियात्मक विकास - Hand
शारीरिक विकास - Health
3 H का श्रेय / वर्तमान शिक्षा के विकास का श्रेय - पेस्टोलोजी।

परिभाषाएं :-

- **स्वामी विवेकानंद :-** मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।
- **महात्मा गांधी :-** शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा की सर्वोत्तम विकास की अभिव्यक्ति है।
- **जॉन डी. वी :-** शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास है जिनके द्वारा वह वातावरण के ऊपर नियंत्रण स्थापित करता है।
- **डुनेविले के अनुसार :-** शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सभी प्रभाव व अनुभव आ जाते हैं, जो बालक को जन्म से मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।
- **पेस्टोलोजी :-** शिक्षा व्यक्ति की जन्माजात शक्तियों का स्वाभाविक, विरोधहीन तथा प्रगतिशील विकास है।
- **अरस्तू -** शिक्षा का कार्य स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना है।
- **प्लेटो -** शिक्षा व्यक्ति में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक परिवर्तन लाती है।
- **जॉनलॉक -** जिस प्रकार फसल के लिए कृषि होती है उसी प्रकार से बालक के लिए शिक्षा होती है।
- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार -** "शिक्षा व्यक्तिकरण व समाजीकरण की प्रक्रिया है, जो व्यक्ति की उन्नति व समाज उपयोगिता को बढ़ावा देती है।
- **कॉलसेनिक के अनुसार -** "शिक्षा बालक में शारीरिक व मानसिक विकास करती है।"
- **रविचन्द्र टैगोर के अनुसार -** "शिक्षा वह ज्ञान है जो केवल सूचनाएं ही नहीं देता है अपितु मनुष्य के जीवन और उसके संपूर्ण वातावरण के प्रति तादम्य (समायोजन) स्थापित करता है।"

शिक्षा की विशेषताएं :-

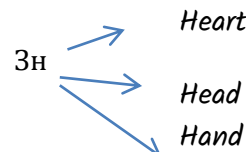
- जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
- शिक्षा सामाजिक व सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है।
- शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक दोनों रूप में हो सकती है।
- शिक्षा आदर्शात्मक / मूल्यात्मक है।

शिक्षा के प्रकार :-

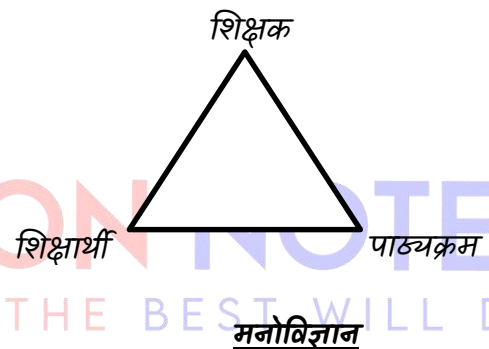
1. औपचारिक - स्कूल,
2. अनौपचारिक - परिवार,
3. निरौपचारिक - पत्राचार।

औपचारिक शिक्षा - जिसका समय व स्थान निश्चित हो।
जैसे - स्कूल में शिक्षा
(ii) अनौपचारिक शिक्षा - जिसका स्थान व समय निश्चित न हो, जीवन पर्यन्त चलती है, जैसे - परिवार, समाज में।
(iii) निरौपचारिक शिक्षा - दूरस्थ शिक्षा, पत्राचार व खुले विद्यालय या कॉलेज द्वारा शिक्षा।

महात्मा गांधी ने मातृभाषा शिक्षण का 3H सूत्र दिया



नोट :- जॉन डीवी ने पुस्तक शिक्षा एवं समाज में शिक्षा के तीन तत्त्व बताए जिन्हें त्रिमार्गीय प्रक्रिया कहते हैं -



मनोविज्ञान का विकास / उत्पत्ति - प्लेटो, अरस्तू जैसे दार्शनिकों ने मानव मस्तिष्क को समझने व जानने के लिए तथा शरीर से उसका सम्बन्ध समझाने की कोशिश की। हिप्पो क्रेटिस ने सबसे पहले इस विचार का प्रतिपादन किया कि मस्तिष्क चेतना का केंद्र है तथा समस्त मानसिक रोगों के कारणों का विवेचन किया। जैसे - कला, रक्त, कफ व पीला पित्त

- सुकरात ने विचार दिया कि मनुष्य को स्वयं के बारे में सोचना चाहिए। प्लेटो ने (ई. पूर्व 5 वीं - 4 वीं सदी) आत्मा ही परमात्मा का विचार दिया तथा अरस्तू ने 384 ई. पू. से 322 ई. में दर्शनशास्त्र में आत्मा का अध्ययन किया, यही आत्मा का अध्ययन आगे चलकर आधुनिक मनोविज्ञान बना, इसलिए अरस्तू को मनोविज्ञान का जनक माना जाता है तथा अरस्तू के काल से ही मनोविज्ञान जन्म माना जाता है।
- मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो प्राणियों के व्यवहार एवं मानसिक तथा दैहिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यवहार में मानव व्यवहार के साथ-साथ पशु-पक्षियों के व्यवहार को भी सम्मिलित किया जाता है।

- "मनोविज्ञान" शब्द का शाब्दिक अर्थ है- मन का विज्ञान अर्थात् मनोविज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जो मन का अध्ययन करती है। मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी भाषा के Psychology शब्द से बना है।
- 'साइकॉलोजी' शब्द की उत्पत्ति यूनानी(लैटिन) भाषा के दो शब्द 'साइकी(Psyche) तथा लोगस(Logos) से मिलकर हुई है। 'साइकी' शब्द का अर्थ -आत्मा है जबकि लोगस शब्द का अर्थ -अध्ययन या ज्ञान से है इस प्रकार से हमने समझा की अंग्रेजी शब्द "साइकॉलोजी" का शाब्दिक अर्थ है- आत्मा का अध्ययन या आत्मा का ज्ञान।

अब हम मनोविज्ञान की कुछ विचारधाराओं को समझते हैं -

1. **मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान-** यह मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा है जिसका समय आरम्भ से 16वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक प्लेटो, अरस्तू, देकार्त, सुकरात आदि को माना जाता है। यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। साइकॉलोजी शब्द का शाब्दिक अर्थ भी "आत्मा के अध्ययन" की ओर इंगित करता है।
2. **मनोविज्ञान मन/मस्तिष्क का विज्ञान -** यह मनोविज्ञान की दूसरी विचारधारा है जिसका समय 17 वीं से 18वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक जॉन लॉक, पेम्पोलॉजी, थॉमस रीड आदि थे। आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा के अस्वीकृत हो जाने पर मध्ययुग (17वीं शताब्दी) के दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। इनमें मध्ययुग के दार्शनिक पेम्पोलॉजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
3. **मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान -** यह मनोविज्ञान की तीसरी विचारधारा है जिसका समय 19वीं शताब्दी माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक विलियम वुट, ई.बी.टिचनर, विलियम जेम्स, आदि को माना जाता है। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा मन या मस्तिष्क के विज्ञान की जगह मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में व्यक्त किया गया। टिचनर, विलियम जेम्स, विलियम वुट आदि विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में स्वीकार करके कहा कि मनोविज्ञान चेतन क्रियाओं का अध्ययन करता है।
4. **मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान -** यह मनोविज्ञान की नवीनतम विचारधारा है जिसका समय बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से आज तक माना जाता है। यह मनोविज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण विचारधारा है। इस विचारधारा के समर्थक वाटसन, वुडवर्थ, स्किनर आदि को माना जाता है। मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। वाटसन, वुडवर्थ, स्किनर आदि मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को व्यवहार के एक निश्चित विज्ञान के रूप

में स्वीकार किया। वर्तमान समय में मनोविज्ञान की इस विचारधारा को ही एक सर्वमान्य विचारधारा के रूप में स्वीकार किया जाता है।

मनोविज्ञान की परिभाषाएं

- **वुडवर्थ** - "सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोड़ा। फिर इसने अपने मन को त्यागा। फिर इसने चेतना खोई। अब वह व्यवहार को अपनाये हुए है।
- **वाटसन** - "मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है।"
- **मैक्डूगल** - "मनोविज्ञान व्यवहार एवं आचरण का विज्ञान है।"
- **स्किनर** - "मनोविज्ञान व्यवहार एवं अनुभव का विज्ञान है।"
- **क्रो एवं क्रो** - "मनोविज्ञान मानव व्यवहार एवं मानवीय संबंधों का अध्ययन है।"
- **वुडवर्थ** - "मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में होने वाले व्यवहार का अध्ययन है।"
- **जेम्स ड्रेवर** - "मनोविज्ञान शुद्ध विज्ञान है।"
- **बोरिंग एवं लेंगफील्ड** - "मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।"
- **मैक्डूगल** - मनोविज्ञान जीवित वस्तुओं के व्यवहार का विधायक विज्ञान है।"

मनोविज्ञान के संप्रदाय

संरचनावाद संप्रदाय -

- यह मनोविज्ञान का प्रथम सम्प्रदाय है जिसके प्रवर्तक विलियम वुण्ट, टिचनर आदि हैं।
- इस सम्प्रदाय के अनुसार मनुष्य की चेतना में मानसिक तत्वों का महत्वपूर्ण स्थान है। चेतना में संवेदना, प्रत्यक्ष ज्ञान, कल्पना(भाव) आदि सम्मिलित हैं। संरचनावाद में अंतरदर्शनात्मक विश्लेषण के द्वारा मन और चेतना के स्वरूप को जानने का प्रयास किया जाता है।

प्रकार्यवाद संप्रदाय -

- इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक जॉन डीवी, विलियम जेम्स।
- प्रकार्यवाद सम्प्रदाय के अनुसार मानसिक क्रियाएँ गतिशील और सप्रयोजनीय होती हैं।
- प्रकार्यवादियों ने संपूर्ण व्यक्ति के अध्ययन पर जोर दिया और मनोविज्ञान तथा जीव विज्ञान में घनिष्ठ संबंध स्थापित किया।

साहचर्यवाद संप्रदाय -

इस संप्रदाय की स्थापना जॉन लॉक ने की थी। इसके अंतर्गत स्पंदन तथा स्मृति में सम्बन्ध ज्ञात करने के साहचर्य को स्वीकार किया गया है।

व्यवहारवाद संप्रदाय -

- इस सम्प्रदाय के प्रतिपादक जे.बी. वाटसन को माना जाता है। -व्यवहारवाद सम्प्रदाय मूर्त यथार्थ तथ्यों की व्याख्या करता है। इसके अनुसार मनोविज्ञान प्रकृति विज्ञान की एक

अध्याय - 2

कक्षा में अध्यापकों की भूमिका

- प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एडम्स कहते हैं कि शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है, शिक्षा द्विमुखी रूपी प्रक्रिया की दो धुरियाँ हैं, एक है 'शिक्षक' तथा दूसरी है 'शिक्षार्थी'। अतः शिक्षक को बालक की प्रवृत्तियों, रुचियों, क्षमताओं, योग्यताओं और आवश्यकताओं का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।
- किसी भी विषय के शिक्षण की सफलता अध्यापक पर ही निर्भर करती है। विद्यालयी कक्षाओं में बालकों के लिए अध्यापक ही प्रेरणा और ज्ञान का सहज एवं सुलभ स्रोत है। एक शिक्षक को अपने दायित्वों का भलीभाँति निर्वाह करने तथा शिक्षण में सफलता करते हुए निम्न विशेषताओं का होना आवश्यक है -
- विषय का पूर्ण ज्ञान** - शिक्षक को अपने विषय का नवीनतम पूर्ण ज्ञान होना चाहिए ताकि वह आत्मविश्वास के साथ प्रभावी अध्यापन करवा सके। प्रतिभावान एवं सृजनात्मक विद्यार्थियों की शंकाओं व कठिनाइयों का निवारण सहजता व स्पष्टता से कर सके तथा ऐसे अधिगमकर्ताओं की गहन अध्ययन के लिए सन्दर्भित पुस्तकों / साहित्य का स्वाध्याय करने हेतु मार्ग - निर्देशित एवं अभिप्रेरित करने में सक्षम हो।
- प्रभावशाली व्यक्तित्व** - अध्यापक का व्यक्तित्व प्रभावशाली हो। वह शारीरिक तथा मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो। उसके आचार - विचार, रहन - सहन, खान-पान एक आदर्श ही होना चाहिए। ऐसा अध्यापक ही बालकों पर प्रभाव डाल सकता है और उनका सर्वांगीण विकास कर सकता है।
- सहनशीलता** - शिक्षक को छात्रों को कोई तथ्य, सिद्धांत या सूझ समझाते समय बहुत ही धैर्यपूर्वक काम लेना चाहिए। शिक्षक में ज्ञान संचय की इच्छा होनी चाहिए। अध्यापक को कभी भी अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए तथा बच्चों को मनोवैज्ञानिक रूप से समझाकर उन्हें ठीक रास्ते पर ले आना चाहिए।
- अध्यापन कार्य में रुचि** - शिक्षक को स्वयं में हीनता और उदासीनता की भावना को कभी भी उत्पन्न नहीं देना चाहिए तथा अध्यापन कार्य एवं गहन अध्ययन में रुचि लेनी चाहिए। उसे अधिगम के विभिन्न सिद्धांतों का ज्ञान होना चाहिए।
- आत्मविश्वास** - अध्यापक द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली प्रत्येक क्रिया में आत्मविश्वास झलकना चाहिए। आत्मविश्वास से शिक्षक अध्यापन कार्य में स्वाभाविक ढंग से समर्थ हो सकता है। आत्मविश्वास के अभाव में विषय में माहिर होने के बावजूद भी शिक्षक उसे सफलतापूर्वक नहीं पढ़ा सकता।

- परिश्रमी तथा कर्तव्यपरायण** - अध्यापक को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक होना भी आवश्यक है। विद्यार्थियों को उचित रूप से शिक्षा में यथाशक्ति उसे कमी नहीं छोड़नी चाहिए। उसे गम्भीरतापूर्वक अपना पाठ भलीभाँति सोच समझकर तैयार करके ही पढ़ाना चाहिए तथा शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हर सम्भव प्रयास करने चाहिए।
- नवीनतम विधि - प्रविधियों का ज्ञान** - इस वैज्ञानिक युग में शिक्षक को नवीनतम विधि - प्रविधियों का प्रयोग करना चाहिए तथा आधुनिकतम शैक्षिक दृश्य - श्रव्य शिक्षण - अधिगम सामग्री प्रयुक्त करनी चाहिए। साथ ही बाल - मनोविज्ञान का ज्ञान भी शिक्षक के लिए आवश्यक है।
- सहायक सामग्री का प्रयोग एवं स्वयं निर्माण की कुशलता** - उचित शिक्षण के लिए आवश्यक है कि अध्यापक उपयोगी सहायक साधनों का आवश्यकतानुसार उचित प्रयोग करना जानता हो। शिक्षण संबंधी सभी प्रकार की दृश्य - श्रव्य सामग्री को प्राप्त करने, प्रयोग करने एवं उससे पूर्ण शिक्षण के लाभ उठाने में अध्यापक पूरी तरह से योग्य होना चाहिए। साथ ही इस प्रकार की सहायक सामग्री का तथा अन्य साज - सामान एवं उपकरणों को कम खर्च में कैसे स्वयं निर्मित किया जा सकता है, इसकी भी उसे व्यवहारिक जानकारी होनी चाहिए।
- शैक्षिक नवचारों का ज्ञान** - शिक्षक को शैक्षिक नवचारों का ज्ञान होना चाहिए। शिक्षा जगत में होने वाले दिन - प्रतिदिन नए आविष्कारों एवं शोधों के बारे में जानकारी होने से शिक्षक प्रभावी शिक्षण करा सकता है और शिक्षण के स्वरूप को नया रूप प्रदान किया जा सकता है।
- नवीन मूल्यांकन विधियों का ज्ञान** - शिक्षक को नए प्रकार की मूल्यांकन प्रविधियों का ज्ञान होना आवश्यक है। उसे बुद्धि - परीक्षण, अभिरुचि - परीक्षण, नैदानिक-परीक्षाओं आदि विषय में भी जानकारी रखनी चाहिए।
- विषय के प्रति व्यवहारिक दृष्टिकोण एवं व्यावसायिक निष्ठा** - शिक्षक को अपने विषय के प्रति सही एवं रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए तथा अध्यापन के प्रति एक व्यवसाय की भाँति आशावादिता, पूर्ण निष्ठा एवं प्रेम रखना चाहिए। उसमें उत्तरदायित्व निभाने, उद्देश्य में प्रति ईमानदार तथा कर्तव्य भावना होनी चाहिए। व्यावसायिक निष्ठा शिक्षण की प्रगति की आधारशिला होती है।
- निष्पक्ष दृष्टिकोण** - अध्यापक को सभी बालकों के प्रति पक्षपात और द्वेष भावना से रहित समान व्यवहार करना चाहिए। किसी भी छात्र के लिए पूर्व धारण बनाए बिना सभी को प्रयोग आदि करने का, प्रदर्शन में भाग लेने का तथा अन्य कई तरह से सभी का समान रूप से पूरा - पूरा ध्यान रखने का प्रयत्न करना चाहिए।

- **अभिव्यक्त करने की शक्ति** - अध्यक्ष में यह सामर्थ्य होनी चाहिए कि वह विद्यार्थियों से जो भी कहना या समझना चाहता है, उसे विद्यार्थियों तक पहुँचा सके। उसके विचार सुलझे हुए होने चाहिए तथा आवाज स्पष्ट, मधुर एवं अच्छी तरह सुनी जाने वाली होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे श्याम - पट्ट पर की जाने वाली लिखाई, खींचे जाने वाले चित्र आदि कार्य में इतना पटु होना चाहिए कि वह विषय को स्पष्टतापूर्वक प्रस्तुत कर सके।
- **अध्ययनशीलता** - अध्यक्ष को स्वभाव से ही अध्ययनशील होना चाहिए। सभी अर्थों में सफल अध्यापक वही कहा जा सकता है, जिसमें हर समय कुछ न कुछ सीखने की तथा अपना ज्ञान भंडार बढ़ाने की इच्छा बनी रहे।
- **शिक्षण - कौशलों का ज्ञान** - शिक्षक को विभिन्न प्रकार के कौशलों का ज्ञान होना आवश्यक है तब ही वह सजीव एवं प्रभावशाली शिक्षण करा सकता है। इसलिए शिक्षक को प्रस्तावना कौशल, प्रश्न कौशल, सम्प्रेषण कौशल, उद्दीपन - परिवर्तन कौशल, कक्षा - प्रबंध कौशल, शिक्षक सहायक सामग्री की सहायता से विषय वस्तु को स्पष्ट सम्प्रेषित करने का कौशल आदि का ज्ञान होना चाहिए।
- **शिक्षण सम्बन्धी अन्य कार्य - कलाओं के संगठन में कुशल** - शिक्षक को शिक्षण संबंधी सभी पाठ्यान्तर क्रियाओं, संग्रहालय आदि का संगठन एवं उनसे उचित लाभ उठाने के लिए प्रवीण होना चाहिए।
- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण** - शिक्षक का मुख्य उद्देश्य बालकों में वैज्ञानिक ढंग से कार्य करने की आदत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना है। अध्यापक को अन्धविश्वास से परे होना चाहिए। उसे किसी भी बात को तर्क एवं परीक्षण की कसौटी पर परखे बिना सही नहीं मानना चाहिए तथा जो कुछ भी कहना हो, उसे पूर्ण रूप से तर्क सम्मत एवं प्रयोगों के आधार पर ही कहना चाहिए।
- **बाल मनोविज्ञान का ज्ञान** एक शिक्षक को यदि बाल मनोविज्ञान का ज्ञान हो तो वह बालकों की रुचियों, भावनाओं, विचारों और आवश्यकताओं को भली प्रकार समझ सकता है। विद्यार्थियों को पढाई उनकी रुचि व उनकी अनुकूलता के केन्द्र के आधार पर करवाई जाए तो वे पूरे मन से ध्यान देते हैं। जरा - सी असावधानी बच्चों की विषय के प्रति अरुचि अथवा अध्यापक के प्रति भय का कारण बन सकती है।
- **उत्साहवर्धक** - शिक्षक को उत्साही होना चाहिए, जिससे वह अपने कार्य को उत्साह व रुचिपूर्वक कर सकता है। उसमें वैज्ञानिक अभिवृत्ति सृजित होनी चाहिए।
- **स्वयं के विषय के अतिरिक्त अन्य विषयों का ज्ञान** - शिक्षक को अपने विषय के साथ - साथ अन्य विषयों का भी ज्ञान होना आवश्यक एवं अपरिहार्य है। यदि विभिन्न विषयों का उसे सामान्य ज्ञान होगा, तो वह अपने विषय का

अन्य विषयों के साथ समन्वय करके अपने शिक्षण को प्रभावशाली बना लेगा।

विज्ञान शिक्षक के दायित्व :

- **व्यवसाय के प्रति जागरूक** - एक शिक्षक को पाठ्यपुस्तक के ज्ञान तक सीमित न रहकर अपने अध्यापन कार्य के प्रति सजग, जागरूक एवं निष्ठावान होना चाहिए।
 - **दया, सहयोग, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार** - वे छात्र जो प्रतिभावान हैं, को शिक्षक को अतिरिक्त सामग्री की सुविधा तथा वे जो मंदबुद्धि या पिछड़े हुए हैं, के लिए नैदानिक परीक्षण द्वारा कमजोर पक्षों से संबंधित उपचारात्मक शिक्षण व्यवस्था करके, उनके साथ सहयोग एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।
 - **स्वाध्याय का पक्षधर** - शिक्षक में स्वाध्याय की आदत होनी चाहिए ताकि वह अपने शैक्षिक स्तर का समुन्नयन कर सके तथा वह छात्रों को भी स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित करे।
 - **स्पष्टता** - शिक्षक को पाठ्यपुस्तक सम्बन्धी प्रयोग, सिद्धांतों, तथ्यों एवं नियमों की अवधारणा स्पष्ट होनी चाहिए तभी वह विद्यार्थियों की शैक्षिक पिपासा को सन्तुष्टि प्रदान कर सकता है।
 - **आशुरचित उपकरणों के निर्माण हेतु प्रेरणा** - शिक्षक को स्वयं विभिन्न प्रकरणों व सम्प्रत्ययों की स्पष्ट धारणाएँ करने हेतु आशुरचित उपकरणों का निर्माण करना चाहिए तथा छात्रों को भी इस इस दिशा में उन्मुख होने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
 - **शिक्षण को प्रभावशाली बनाना** - शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए उसे अपने छात्रों की रुचियाँ, आवश्यकताएँ, मानसिक स्तर, विशेष क्षमताएँ, कौशल अनुभव, सामाजिक गुण एवं अन्य विस्तृत जानकारी प्राप्त करनी चाहिए ताकि उनकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं का समुचित समायोजन हो सके।
 - **खाली समय का उपयोग** - शिक्षक को खाली समय में विभिन्न पत्र - पत्रिकाओं, सहायक पुस्तकों व नवीन शैक्षिक साहित्य का अध्ययन करते रहना चाहिए, जिससे उसका मानसिक विकास बढ़ता रहे तथा वह अपने शिक्षण को प्रभावी बना सके। छात्रों को भी अवकाश के समय का सदुपयोग करने हेतु प्रेरित करे।
- 22 सितम्बर 2008 को राज्य सरकार ने कक्षा 1 से 8 तक के सभी विद्यार्थियों हेतु राजकीय शिक्षण शुल्क मुक्त कर दिया। अब राजस्थान 8वीं तक के सभी विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करने वाला देश का प्रथम राज्य बन गया। पूर्व में यह सुविधा केवल लड़कियों को ही देय थी।



अध्याय - 13

शिक्षा का अधिकार अधिनियम - 2009

RTE - Right to Education - 2009

- आजादी से पूर्व भारत में 1835 में लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा पद्धति कि नींव रखी। तथा निस्मंदन सिद्धांत दिया जिसका उद्देश्य था - "भारत में वो बाबू तैयार करना जो सूरत से भारतीय तथा अक्ल से अंग्रेज हो।"
- 1854 में वुड डिस्पैच जिसे भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा (महाधिकार पत्र) कहा जाता है। डिस्पैच का अर्थ है - सरकारी पत्र "

नोट :- वुड डिस्पैच को आधुनिक शिक्षा का मैग्नाकार्टा (जनक) कहा जाता है।

- 1937 महात्मा गाँधी ने वर्धा योजना के दौरान नई तालीन (शिक्षा) या आधारभूत शिक्षा या बेसिक शिक्षा के द्वारा 14 वर्षों तक के विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा देने की बात कही। जिसमें सभी विद्यार्थियों को सामाजिक जीवन से संबंधित जीविकोपार्जन की शिक्षा प्रदान की जाये।

नोट :- भारत में 1910 में गोपाल कृष्ण गोखले ने निः शुल्क शिक्षा प्रदान की मांग उठाई थी।

आर. टी. ई. का इतिहास :-

- 1947 में आजादी के बाद भारतीय संविधान के अनु. 45 में यह व्यवस्था की गई है कि - "6 -14 वर्ष तक के बच्चों को आजादी के 10 वर्ष बाद अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था कर दी जायेगी।"
- दिसम्बर 2002- 86 वां संविधान संशोधन किया गया जिसमें 21-A शिक्षा का अधिकार तथा बालकों की शिक्षा के प्रति सरकार व अभिभावकों के कर्तव्य / दायित्व मूल कर्तव्य 51-A जोड़ा गया।

नोट :- अनु. 45 में 0-6 वर्ष (बचपन की देखभाल) शेष रहा है। परन्तु अब समस्या यह थी कि इस सम्पूर्ण देश में लागू कैसे किया जाये। इसके लिये आर.टी.ई. का उदय हुआ।

आर.टी.ई. कि कानूनी प्रक्रिया :-

RTE - 2009 -20 जुलाई 2009 में राज्य सभा में पारित तथा 4 अगस्त 2009 में लोक सभा में पारित हुआ। फरवरी 2010 में राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल के हस्ताक्षर से कानून बना।

1 अप्रैल 2010 को इस एक्ट को जम्मू कश्मीर को छोड़कर सम्पूर्ण देश में लागू किया गया। इसका श्रेय तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह को जाता है। (वर्तमान में जम्मू कश्मीर में भी लागू)

RTE - 2009 का उद्देश्य -6 से 14 वर्ष तक के बालकों की शिक्षा।

प्रावधान - सभी बालकों को शिक्षा से जोड़ने के लिए बिना किसी भेद-भाव के शिक्षा मंच पर लाया जाये, इसके लिए

प्रत्येक बालक को प्राथमिक शिक्षा 1 km की तथा उच्च प्राथमिक शिक्षा 3 km की अधिकतम दूरी पर उपलब्ध हो। आर.टी.ई. की संरचना :-

अध्याय- (1) प्रस्तावना।

अध्याय- (2) निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम।

अध्याय- (3) समुचित सरकार स्थानीय प्राधिकारी माता - पिता के कर्तव्य

अध्याय-(4) विद्यालय एवं शिक्षकों के उत्तरदायित्व

अध्याय-(5) प्रारम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम तैयार करना। और उसे पूर्ण करना।

अध्याय-(6) बाल संरक्षण अधिनियम(2005) / बाल अधिकारी संरक्षण अधिनियम (2005)।

अध्याय-(7) प्रकीर्ण (विशेषाधिकारों को शामिल किया गया।

नोट :- आर.टी. ई. एक्ट का सबसे बड़ा अध्याय- अध्याय (4) है।

बाल संरक्षण अधिनियम (2005) - बालक के अधिकारों की सुरक्षा करता है।

आर.टी.ई. कि धाराएं :-

धारा -3 :6-14 वर्ष के बालकों के लिए अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था पर विचार।

धारा -4 : कक्षा में प्रवेश आयु स्तर के अनुसार **धारा -5** : स्थानान्तरण

धारा -6 : प्राथमिक विद्यालय -1 km की दूरी पर उच्च प्राथमिक विद्यालय 3 km की दूरी पर हों

धारा-10 : बालकों को विद्यालय में जोड़ने का दायित्व माता-पिता के लिए तय किया गया है।

धारा -12 : सभी निजी विद्यालयों में कक्षा प्रथम में 25% सीटें गरीब बच्चों के लिए आरक्षित रहेंगी।

धारा -13 : प्रवेश प्रक्रिया के दौरान ना तो प्रवेश परीक्षा ली जाएगी तथा ना ही साक्षात्कार और ना ही डोनेशन के नाम पर वसूली की जाएगी।

धारा -14 : प्रवेश प्रक्रिया के दौरान आवश्यक प्रमाण पत्रों से मुक्ति

धारा -15 : 1-8 तक की कक्षा में प्रवेश की अंतिम तिथि 30 सितंबर है लेकिन पूरे वर्षभर में प्रवेश लिया जा सकेगा।

धारा-16 : बालक को ना तो फेल किया जा सकेगा और ना ही विद्यालय से निकाला जा सकेगा जब तक वह प्रारंभिक परीक्षा पास ना कर ले।

धारा- 17 : बालक को शारीरिक व मानसिक रूप से दंडित नहीं किया जायेगा।

धारा -18 : बिना मान्यता के विद्यालय चलाने पर पूर्ण प्रतिबंध है, अगर पाया गया तो जुर्माना। लाख रुपए है।

धारा- 19 : विद्यालय के मानक संबंधी प्रावधान

धारा- 20 : सरकार समुचित मानकों में परिवर्तन कर सकती है।

धारा -21 : S.M.C में 16 सदस्य होते हैं जो 2 वर्ष के लिए चुने जाते हैं।

S. M. C - School Management Committee (विद्यालय प्रबंधन समिति)

प्रत्येक महीने की अमावस्या को मीटिंग होती है जिसमें अभिभावकों को सदस्य बनाया जाता है। जिनमें सर्वाधिक महिला सदस्य होती है।

(कुल सदस्यों में 75% अभिभावक होंगे जिसमें से 50% महिलाएं होंगी।)

धारा-22 : टिप टिप टिप बरसे विद्यालय विकास योजना बनेगी जो S.M.C के सदस्यों द्वारा बनाई जाएगी।

धारा- 23 : इस धारा में अध्यापक के पद की योग्यता का उल्लेख है।

धारा- 24 : अध्यापक का कर्तव्य होगा कि वह नियमित रूप से विद्यालय आये।

धारा- 25 : छात्र- शिक्षक अनुपात

(i) 1- 5 तक की कक्षा में 30 विद्यार्थियों पर एक अध्यापक रहेगा 30:1

(ii) 150 विद्यार्थियों से अधिक पर एक HM+5 अन्य अध्यापक रहेंगे।

(iii) 200 विद्यार्थियों पर 40:1 रहेगा।

(iv) कक्षा 6-8 तक की कक्षा में अनुपात 35:1 रहेगा।

200 कुल कार्य दिवस होंगे और उच्च प्राथमिक में 220 दिन।

800 कुल घंटे होंगे तथा उ.प्रा. में 1000 घंटे

100 बच्चों पर। H. M रहेगा।

1 अध्यापक गणित + विज्ञान पढ़ायेगा।

कक्षा 6-8 में 3 शिक्षक अनिवार्य - भाषा का, गणित और सामाजिक विज्ञान का शिक्षक।

= प्रति सप्ताह एक शिक्षक के लिए 45 घंटे निर्धारित किये गये हैं जिसमें तैयारी व शिक्षण का समय भी शामिल होगा।

धारा -26 : किसी भी विद्यालय में 10% से अधिक पद रिक्त नहीं रह सकते।

धारा- 27 : चुनाव, जनगणना आपदा कार्यों के अलावा अध्यापक की ड्यूटी किसी भी अन्य सरकारी कार्यों में नहीं लगाई जाएगी।

धारा- 28 : कोई भी अध्यापक निजी ट्यूशन नहीं करवा सकता।

धारा- 30 : कक्षा 8 बोर्ड परीक्षा के लिए बाध्य नहीं

धारा- 37 SMC के खिलाफ कार्यवाही सम्बन्धी प्रक्रिया

बाल अधिकारों का संरक्षण

धारा- 31 : बाल संरक्षण अधिनियम -2005 के तहत राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग और राज्य बाल संरक्षण आयोग का गठन।

धारा -32 : बाल संरक्षण आयोग में अपील का प्रावधान।

धारा- 33 : राष्ट्रीय शिक्षा सलाहकार समिति का गठन।

धारा- 34 : राज्य शिक्षा सलाहकार समिति के सदस्यों का उल्लेख वर्तमान में सदस्य संख्या -15 है।

शिक्षक के निम्न दायित्व बताये गये हैं :-

1. स्कूल में नियमित आयेंगे।
2. पाठ्यक्रम संचालित करेंगे और समय पर पूरा करेंगे।
3. पढ़ाने का स्तर, गति और शिक्षण योजना बालकों के अनुसार तय की जायेगी। आवश्यक हो तो अतिरिक्त कक्षाएं भी लेंगे।
4. माता - पिता व अभिभावकों के साथ संवाद करेंगे।
5. सरकार द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भाग लेंगे।

धारा-38 राज्य सरकार चाहे तो निजी हितों को ध्यान में रखते हुए संशोधन करवा सकती है।

(1) अध्यापकों की संख्या :-

1. कक्षा 1 से 5 तक :-
60 छात्र पर = 2 अध्यापक
61 - 90 छात्र पर = 3 अध्यापक
91 - 120 छात्र पर = 4 अध्यापक
121 - 150 छात्र पर = 5 अध्यापक
151 - 200 छात्र पर = 5 अध्यापक व 1 मुख्य अध्यापक।
2. कक्षा 6 से 8 तक - प्रति 35 छात्रों पर = 1 अध्यापक
अनिवार्य तथा निम्न विषयों के अध्यापक प्रति कक्षा
गणित
विज्ञान
सामाजिक विज्ञान
भाषा।

नोट :- अगर छात्र संख्या 100 या 100 से अधिक है तो पूर्णकालिक प्राधानाध्यापक होगा तथा निम्न विषयों के अध्यापक अल्पकालिक होंगे -

1. कला शिक्षा।
2. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा।
3. कार्यानुभव शिक्षा / नैतिक शिक्षा।
4. IT

(2) कार्यदिवस एवं शिक्षा घण्टे :-

कक्षा 1 से 5 तक - कुल शिक्षण घण्टे = 800 घण्टे।

कुल कार्य दिवस = 200 दिन।

प्रतिदिन शिक्षण कार्य = 4 घण्टे।

कक्षा 6 से 8 तक - कुल शिक्षण घण्टे = 1000 घण्टे।

कुल कार्य दिवस = 220 दिन।

प्रतिदिन शिक्षण कार्य = 4.30 घण्टे।

(3) विद्यालय के मानक :- विद्यालय के मापदंड को धारा 19 बताती है कि -

1. विद्यालय का सुविधायुक्त भवन जहां विद्यार्थियों की पहुंच आसानी से हो।
2. प्रत्येक मौसम के अनुकूल कक्षा - कक्षा।
3. प्रत्येक कक्षा के लिये अलग कक्षा - कक्षा।
4. प्रत्येक शिक्षक के लिये एक तैयारी कक्षा।
5. स्टाफ रूम।
6. व्याख्यान कक्ष (Seminar Hall)

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams

(Proof Video Link) 

RAS PRE. 2021 - <https://shorturl.at/qBJ18> (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - <https://shorturl.at/tGHRT> (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - <http://surl.li/rbfyn> (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - <https://youtu.be/gPqDNlc6UR0>

Rajasthan CET 12th Level - <https://youtu.be/oCa-CoTFu4A>

RPSC EO / RO - <https://youtu.be/b9PKjl4nSxE>

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s>

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - <https://youtu.be/2gz2fJyt6vl>

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp <https://wa.link/vitrdd> 1 web.- <https://bit.ly/lab-assistant-notes>

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसम्बर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसम्बर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसम्बर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1 st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.